5624

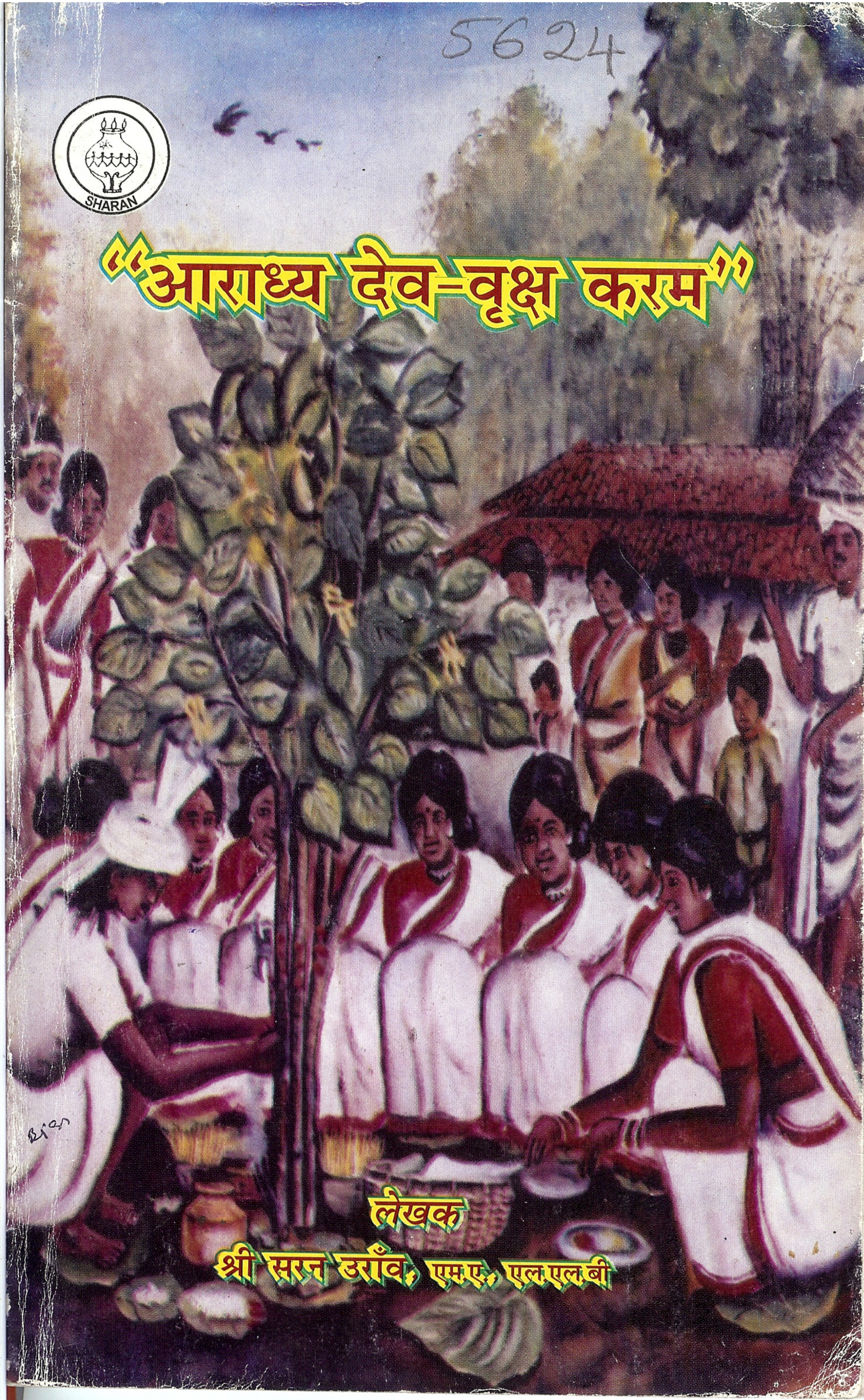

"आराध्य देव-वृक्ष करम"

लेखक
श्री सरन उराँव, एम.ए., एल.एल.बी

"आराध्य देव-वृक्ष करम"

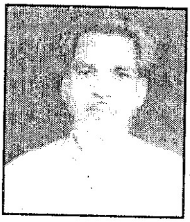

लेखक

श्री सरन उराँव, एम.ए., एल.एल.बी

वरीय लेखाकार, महालेखाकार का कार्यालय (लेखा एंव हक) 1

झारखण्ड, राँची

ग्राम हेहल पावा टोली, पो०ओ० हेहल, थाना सुखदेवनगर

जिला राँची-झारखण्ड

फोन नं. - 0651-3208494, 99055 70243

शरण पंजीकरण संख्या- IV-1226/2004

गहि डाड़ा चाला अखड़ा खोड़हा, हेहल पावा टोली, राँची

आराध्य देव-वृक्ष करम

सर्वाधिकार सुरक्षित

लेखक
श्री सरन उराँव, एम.ए.एल.एल.बी.
वरीय लेखाकार, कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हक)
झारखण्ड, राँची
ग्राम हेहल पावा टोली, पो.ओ. हेहल,
थाना सुखदेव नगर, जिला राँची, झारखण्ड

प्रकाशक
शरण (पंजीकरण संख्या - IV 1226/2004) गहि डाड़ा
चाला अखड़ा खोड़हा, हेहल पावा टोली, राँची ।

प्रथम संस्करण - सितम्बर, 2002
द्वितीय संस्करण - 2008

मुद्रक : सुदर्शन प्रेस, राँची

मूल्य : 50/- रुपये

लेखक - एक परिचय

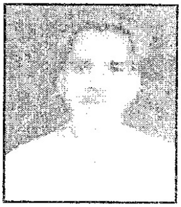

नाम	:	श्री सरन उराँव
पिता	:	स्व. जेंगा उराँव
माता	:	स्व. रामी उराँव
जन्म तिथि	:	12 दिसम्बर सन् 1949
जन्म स्थान	:	ग्राम माड़ी दरमी टोली, पो.ओ. कोयसारा, थाना लापुँग, जिला राँची, झारखण्ड
वर्त्तमान निवास स्थान	:	ग्राम हेहल पावा टोली, पो.ओ. हेहल, थाना सुखदेव नगर, जिला राँची, झारखण्ड
लोवर प्राईमरी	:	लोवर प्राईमरी स्कूल डाड़ी
अपर प्राईमरी एवं मिडिल	:	मध्य विद्यालय ककरिया, लापुँग, राँची ।
मैट्रिक	:	प्र. निर्मला उच्च विद्यालय महुगाँव, लापुँग, राँची से सन् 1965 ई० में ।
महाविद्यालय		
स्नातक कला	:	संत जेवियर्स महाविद्यालय, राँची से सन् 1969 में ।
स्नातकोत्तर इतिहास	:	राँची विश्वविद्यालय राँची से सन् 1972 में
एल.एल.बी.	:	छोटानागर विधि महाविद्यालय (बाल कृष्णा हाई स्कूल) राँची से सन् 1982 में ।
	:	कार्यालय महालेखाकार, बिहार, राँची में
गैर सरकार की सेवा में	:	प्र० उच्च विद्यालय लेटे, लापुँग राँची में सहायक एवं प्रधानाध्यापक के पद पर जनवरी 1973 से अगस्त 1973 तक
केन्द्र सरकार की सेवा में	:	कार्यालय महालेखाकार बिहार राँची में 15 सितम्बर 1973 को अंकेक्षक के पद पर योगदान किया । सन् 1984 में लेखा एवं लेखा परीक्षा का विभाजन एवं तब से अभी तक वरीय लेखाकार के पद पर कार्यरत ।

अन्य गतिविधियाँ

कार्यालय महालेखाकार, बिहार, राँची की ओर से :

कार्यालय नियंत्रक एवं महालेखा परीक्षक नयी दिल्ली के द्वारा आयोजित द्वितीय अखिल भारतीय औडिट एवं एकाउन्टस संस्कृति प्रतियोगिता जनवरी

1990 हैदराबाद में आदिवासी लोकगीत एवं नृत्य प्रस्तुत किया गया, जिसमें प्रथम पुरस्कार से पुरस्कृत किया गया । इसके अलावे तृतीय एवं चतुर्थ अखिल भारतीय संस्कृति प्रतियोगिता में भी क्रमशः 1991 में कलकत्ता और 1993 में नागपुर में लोकगीत एवं नृत्य प्रस्तुत किया गया ।

केन्द्रीय सिविल सेवा क्रीड़ा तथा सांस्कृतिक बोर्ड नयी दिल्ली द्वारा अयोजित संस्कृति प्रतियोगिता फरवरी 1990 में लोकगीत एवं नृत्य प्रस्तुत किया गया ।

सरना नवयुवक संघ केन्द्रीय कार्यालय राँची द्वारा आयोजित सरहुल पूर्व संध्या समारोह 1993 में हमारा संस्कृति दल सरन उराँव एवं परिवार को प्रथम पुरस्कार से पुरस्कृत किया गया ।

प्रकाशित लेख

हर वर्ष सरहुल एवं करमा पूर्व संध्या समारोह के शुभ अवसर पर सरना नवयुवक संघ राँची द्वारा प्रकाशित पत्रिका "सरना फूल" में "सरहुल प्रकृति पूजा", "फगुवा पर्व से जुड़ी विभिन्न आदिवासी संस्कार", आदिवासी संस्कृति में "उराँव" लोक गीत का महत्व", " जनी शिकार", "खरा पूजा", "ओन्टा पद्दा गही करम झलकी" कुड़ुख़ भाषा में एवं केन्द्रीय युवा सरना समिति द्वारा प्रकाशित "जनजातीय आवाज़" पत्रिका में कुड़ुख में "खद्दी परब गही महबा" प्रकाशित हुआ है ।

बिहार सरकार कल्याण विभाग, बिहार जन-जातीय कल्याण शोध संस्थान मोराबादी राँची द्वारा प्रकाशित पुस्तक जनजातिय रीति-रिवाज एवं कानून में फिर "आदिवासी संस्कृति में "उराँव" लोक गीत का महत्व" एवं समय समय पर प्रकाशित बुलेटिन में "आदिवासी परम्पारिक, सामाजिक प्रशासनीक व्यवस्था बनाम पंचायती राज्य व्यवस्था" प्रकाशित हुआ है ।

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हक) 1 बिहार राँची द्वारा प्रकाशित पत्रिका "दिशा" में प्रकृति पर्व-सरहुल" प्रकाशित

हुआ है ।"दिशा सबको चाहिए", करम ही मनुष्य का असली धरम है, "मधु का महत्व", "आदिवासी संस्कृति एक परिचय", "प्रकृति नियम और आयुर्वेदिक चिकित्सा", "उपवास और पूजा", और एक शक्ति ऐसा भी प्रकाशित हुआ है।

कार्यालय महालेखाकार (लेखा परीक्षा) झारखण्ड राँची का पत्रिका उदयाचल में "अमर शहीद वीर बुधु भगत" प्रकाशित हुआ है ।

झारखण्डी भाषा साहित्य संस्कृति अखड़ा पत्रिका में "धरमेश गहि टेम्पा" "आदिवासी अखड़ा" कुड़ुखा भाषा में एवं "महान प्रकृति परब करम "नागपुरी भाषा में प्रकाशित हुआ है ।

सन् 1991-1992 में बोकारो स्पात नगर के सरना सम्मेलन में दिये गये भाषण को स्मारिका में प्रकाशित किया गया है ।

कुड़ुख कत्थ बीड़रना, राष्ट्रीय कुड़ुख सम्मेलन 2006 के राँची झारखण्ड की स्मारिका कुड़ुखर एका बेसे अयंग भखान जोगाबओर अरा अदि ही महबा बुझरोओर नम्हयं खोड़हा नू बीड़रोओत कुड़ुख में प्रकाशित हुआ है ।

वनवासी कल्याण केन्द्र आरोग्य भवन बरियातु राँची द्वारा प्रकाशित पत्रिका "श्रद्धा" में "जन जातीय संस्कार" एवं उराँव समाज का आधारभूत संरचना एवं मान्यताएं प्रकाशित हुआ है । सन् 2007 में "कुड़ुख विनती अरा धरम भजन पुथी" डाड़ा-1 नामक पुस्तक का प्रकाशन हुआ है।

कुड़ुख टेस्ट बुक कमिटि झारखण्ड का सदस्य, कमिटि की ओर से सन् 2002 में सत्य भारती के सभागार में साहित्यकार एवं मान्दर बादक "रसिका" की उपाधि देकर, युवा समाज कल्याण समिति डिबडीह झंकार" (प्रतिभा खोज) 2004 में सरना साहित्यकार एवं समाज सेवी के रूप में, सन् 2007 में वनवासी कल्याण केन्द्र द्वारा सरना धर्म संस्कृति रक्षा सम्मान देकर, 2007 में ही सर्वोदय महिला समिति हेहल, राँची द्वारा साहित्य, संस्कृति एवं सामाजिक क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के लिए सम्मानित किया गया है ।

15 नवम्बर 2007 के झारखण्ड राज्य के सातवें स्थापना दिवस के शुभ अवसर पर झारखण्ड सरकार ने जनजातीय साहित्य एवं संस्कृति क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के लिए "राजकीय सम्मान" से सम्मानित किया है । उसी वर्ष "झारखण्ड विरसा सेवा-समिति", हेहल, राँची द्वारा भी बिरसा जयन्ती के उपलक्ष में आयोजित खेल-कूद प्रतियोगिता समारोह में साहित्य, संस्कृति एवं सामाजिक क्षेत्र में सराहनीय कार्य के लिए सम्मानित किया है ।

आभार

इस दुनिया में मानवी जीवन जितना सरल प्रतीत होता है, उतना वास्तव में वह नहीं है। उसके सामने कठिनाई, जटिलता, अवरोध और सारे अड़चने इतनी हैं कि पग-पग पर उसे झूझने के लिए मजबूर कर देती है। ऐसी ही विकट परिस्थिति में मैंने झारखण्ड राज्य में मनाये जाने वाली सांस्कृति पर्व करम पर एक लघु लेख "आराध्य देव-वृक्ष करम" के बारे में लिखने का बीड़ा उठाया है, जिससे भावी पीढ़ी को करम पर्व को मनाने का परम्पारिक अलिखित नेग-दस्तूर, पूजा पाठ के विधि-विधान तथा करम के संबंध में विशेषकर उरांव समाज में प्रचलित समय-समय पर गाये जाने वाले लोक गीत एवं बाजा के तालों को जो क्षेत्रीय आधार पर है, को जनने और और अनुकरण करने में एवं अपनी भाषा संस्कृति और सामाजिक पहचान को भी बनाये रखने में सहायक सिद्ध होगा। लेकिन इसके लिए मुझे हर वक्त प्रेरणा, प्रोत्साहन एवं मार्गदर्शन की जरूरत महसूस हुई।

इसी जरूरत को पूरा करने के लिए श्री बन्दी उराँव भूत पूर्व आई. पी.एस. अधिकारी, भूत पूर्व उपाध्यक्ष, अनुसूचित जाति/जनजाति राष्ट्रीय आयोग, नयी दिल्ली एवं भूत पूर्व सदस्य, बिहार विधान सभा, श्री जुरेश्र्वर उरांव, सेवा निवृत सहायक अधीक्षक, औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान, हेहल, राँची सरंक्षक युवा सरना समिति हेहल, राँची एवं डा. प्रकाश चन्द्र उराँव, निदेशक झारखण्ड जनजातिय कल्याण शोध संस्थान, मोरहाबादी, राँची ने अपने बहुमूल्य सुझाव, प्रोत्साहन और स्नेह मार्ग दर्शन देकर इस लघु पुस्तिका को तैयार करने में अहम भूमिका निभाए हैं। इसके साथ-साथ मेरा जेष्ठ पुत्र बन्दी उराँव एवं मेरी धर्म पत्नी श्रीमती बिरसो उराँव प्राचार्या, इन्टर महाविद्यालय, लापुँग, राँची के सम्पूर्ण सहयोग के बिना इस लघु पुस्तिका को तैयार कर पाना संभव नहीं था। इस नेक कार्य के लिए मैं सभी का सहृदय आभार प्रकट करता हूँ। मुझे विश्वास है यह लेख पाठकों के लिए लाभकारी सिद्ध होगा।

- श्री सरन उराँव

आराध्य देव-वृक्ष करम

मुख्य बिन्दु : पृष्ठ

मुख्य बिन्दु	पृष्ठ
प्रकाशकीय	1
दो शब्द	4
चाला अखड़ा खोड़हा हेहल पावा टोली का संक्षिप्त परिचय	7
संदेश - बंदी उराँव	11
शुभ संदेश - जुरेश्वर उराँव	12
शुभ संदेश - बन्दी उराँव	13
शुभकामना - प्रकाश चन्द्र उराँव	14
विनती - 1	15
विनती - 2	16
जोअर	17
विनती दुरङ	19
नेहोर जोहार	20
प्रार्थना	21
आखिर करम पेड़ की डाली को ही क्यों पूजा करते हैं?	22
करम ही मानव का असली धरम है ।	29
राज करम के जवा उठाना	30
बुढ़िया करम या पच्चो करम	30
राज करम	35
करम सांझोत के अवसर पर कदलेटा पूजा	37
करम उपवास	38
तीन करम डाली को काटना	39
करम की पूजा	45
करम कहानी में करमा और धरमा का अहम भूमिका	48
करम परना दिन	59
भरनी भराना	61
करम डाईर जोड़ाना	62
करम राजा का विसर्जन	63
उपसंहार	68

प्रकाशकीय

आज के इस प्रगतिशील वैज्ञानिक युग में यह ब्रह्म सत्य सा प्रमाणित हो चुका है कि करम एक साधारण सा वृक्ष मात्र नहीं है अपितु यह असाधारण आराध्य देव-वृक्ष है । दुनिया की तमाम धार्मिक आस्थाओं और मान्यताओं में प्रत्येक धर्म का आदर्श किसी न किसी युग पुरूष अथवा जन्तु विशेष के जीवन दर्शन तथा विविध दृष्टांतों पर आधारित है। उसका आदर्शपूर्ण आचरण ही उनके जीवन दर्शन बन गये और अपने सामर्थ्य के अनुरूप समाज में उनका प्रचार-प्रसार हुआ और दुनिया में एक स्थान बना। सरना धर्म दुनियां का अनोखा उदाहरण है। जिसका एक खास अलग पहचान है। जिसका आदर्श असाधरण और सामान्य से बिल्कुल ही अलग-थलग है।

ईश्वर का माध्यम अथवा पैगम्बर जन्तु वर्ग नहीं बल्कि वनस्पति वर्ग है। इन तमाम आदर्श-पुरूषों अथवा जीव-जनतुओं, जिसमें थलचर, जलचर, नभचर और उभयचर भी शामिल है। विभिन्न धर्मो के आदर्श और प्रेणेता बने । इन तमाम में भिन्न सरना धर्म दुनिया में एक ऐसा उदाहरण है, जिसका मूल आधार और आदर्श बिल्कुल भिन्न है। शक्तिमान ईश्वर का माध्यम जन्तुवर्ग नहीं बल्कि वनस्पति वर्ग है, जिनको हम विभिन्न पर्व-त्योहारों में श्रद्धा के साथ पूजा आराधना करते हैं ।

सभी धर्मों में पूजा और अनुष्ठानों का जन्म किसी न किसी विभीसिका अथवा घटनाक्रम से जुड़ा है। पूजनीय करम के पीछे भी सुनिश्चित यही दृष्टान्त है। जब मानव विपति से गुजर रहा था । उसका अस्तित्व संकट में था करम ने उसकी रक्षा की इसलिए वह सम्मनित है। यह भी अति सत्य है कि प्रत्येक वर्ष इसका आगमन अत्यन्त नाजुक परिस्थति में होता है । जब उसके उपासक विकट परीक्षा की घड़ी में होते हैं । सरना धर्मावलम्बी जिसका जीवनाधार खेती है और खेती पर आधारित अर्थव्यवस्था के लिए भादो का महीना सर्वाधिक अभावपूर्ण और संकट का होता है। आर्थिक तंगी, विविध जन लेवा महामारियों का प्रकोप अतिवृष्टि इत्यादि । ऐसी जोखिम और उदासी की घड़ी में करम का आगमन होता है।

उसके आते ही उसके उपासक में एक अजीब सी शक्ति मिलती है, जिससे प्रेरित होकर विषम परिस्थितियों में भी झाल-मान्दर के अत्यन्त मधुर ताल के बीच सुख और शान्ति का अनुभव करते हैं। इस अजीव उमंग एवं खुशी की लहर में न जाने कितने हृदय विदारक गीत उसके मुखमन्डल से स्वतः प्रस्फुटित हो जाते हैं, जिससे लगता है कि उनके अन्दर खानों का भन्डार है। ऐसी भूख और विषम वेदना की घड़ी में भी अपार धैर्य और साहस बटोरते हैं। ऐसी ही परिस्थिति में उनके अन्तरात्मा से सरल और सहज भाव से स्वतः प्रस्फुटित एक गीत इस प्रकार है - कुड़ुख भाषा में -

की-ड़ा-की-ड़ा बअदी कोय पेल्लो,
हय की-ड़ा निंगहय एवं उल्ला राओ हो ...... ।।1।।

टुड़सिन धरओय
कोम अड़खा तोक्खोय,
हय की-ड़ा निंगहय एवं उल्ला राओ हो ...... ।।2।।

ओन खेत्ता अड़खा,
ओन टुकरा अस्मा,
हय धरमे की-ड़न बुझरोओय का मला हो ...... ।।3।।

अर्थः- एक बिल्कुल भूख से पीड़ित युवती को कोई संत्वना देते हुए कहते हैं कि लड़की तुम भूख-भूख कह रही हो, ये भूख तुम्हारा आखिर कितना दिन तक रहेगा। अकसी (साग तोड़ने का औजार) को पकड़कर कोयनार साग तोड़ कर किसी तरह गुजर-बसर करो। आखिर यह भूख कितना दिन तक रहेगा। एक पत्ता कोयनार का साग और एक टुकड़ा रोटी खा खा कर गुजर बसर कर रहे हैं फिर भी भगवान तुम उसकी भूख को नहीं बुझ रहे हो।

आदिवासियों में हर मौसम के अनुसार गीत गाये जाते हैं। इनका मानना है कि गाँव के देवी-देवताएँ और उनके पुरखे गीत और नृत्य से प्रसन्न होते हैं। अगर असमय किसी गीत को गाया जाय या नृत्य किया जाय तो वे नाखुश हो जाते हैं और कोप स्वरूप गाँव में खसरा रोग का प्रसार कर

देते हैं । करम गीत वर्षा और कृषि के कार्यों का संकेत करती है। एक ही गीत कई रागों में गाये और बजाये जा सकते हैं। गीतों के माध्यम से बात को कहने या रखने का ढंग बिल्कुल सीधा और सरल है। इसलिए किसी उराँव कवि ने कहा है – "कत्था दिम डंड्डी ए-कना दिम तोकना" याने बात ही गीत और चलना ही नाच है। इतना सब कुछ होने के बावजूद भी अभी हमारी भाषा और संस्कृति धरोहर में अनेकों बदलाव और बिखरावपन आ रहे हैं। इसके लिए विशेषकर युवा पीढ़ियों को विशेष रूप से ध्यान देने की आवश्यकत है। परिस्थिति जो भी हो यह सरल सांस्कृतिक धरोहर हमारे बीच अभी तक बरकरार है और आगे भी बरकरार रहे, इसके लिए "चाला अखड़ा-खोड़हा" हेहल पावा टोली और नवयुवक सरना समिति हेहल राँची–5 सदा पथ प्रदर्शक के रूप में अपना कर्त्तव्य निभाएगा ।

जय करम – जय धरम

करम की ढेर सारे शुभकामनाएँ

प्रकाशक

शरण पंजीकरण संख्या

IV–1226/2004 गहि डाड़ा

चाला अखड़ा खोड़हा, हेहल पावा टोली, राँची

❑❑❑

दो शब्द

भारतीय संस्कृति की विविधता ही उसकी मूल विशेषता है। इसी परिपेक्ष्य में जब हम झारखण्ड की आदिवासी संस्कृति पर नजर डालते हैं तो हम पाते हैं कि इसमें भी विविधता की कोई कमी नहीं है। लेकिन सभी आदिवासियों की अपनी एक खास संस्कृति और सभ्यता है, जिसके कारण ही अभी तक उसकी एक खास अलग पहचान बनी हुई है। जब से मनुष्य इस धरती पर जन्म लेता है, तब से वह अपने जाति या समाज का कुछ नियम, धर्म, रीति-रिवाज, परम्परा एवं सामाजिक संस्कार से अपने को जुड़ा हुआ पाता है। इन्हें वह जीवन के अन्तिम दौर तय करने तक इमानदारी से निभाने का प्रयास करता है । इसलिए संभवतः महान दार्शनिक अरस्तु ने मनुष्य को एक सामाजिक प्राणी कहा है। उसका यह कथन मानव समाज के संर्दभ में आज भी अकाट्य है। हम सभी जानते हैं कि आदिवासी प्रकृति पुजारी हैं, इसलिए ही वे अपने सभी पर्व-त्योहारों में प्रकृति के पेड़-पौधों की पूजा करते हैं, जैसे सरहुल में साल पेड़ के फूल, करम में करम का डाल, कदलेटा में भेलवा का डाल तथा हरियारी में सभी अनाजों के हरियाली पौधों को यहाँ पर करम को "करम राजा" और "करम गोसाई" कहा गया है। इससे यह साबित होता है। वह आदिवासियों का अस्तित्व का रक्षक, आध्यात्मिक जीवन दर्शन और सामाजिक परम्पराओं का प्रतीक है।

वह आदिवासी जीवन परम्पराओं में ऐसा रच-बस गया है कि उसे जीवन पहलुओं से अलग नहीं किया जा सकता है। यही वजह है कि आदिवासी समुदाय आराध्य देव-वृक्ष करम को धार्मिक त्योहार के रूप में आत्मसात कर लिये हैं और भादो शुक्ल पक्ष एकादशी को बड़ी धूम-धाम से पूजा-अर्चना करते हैं । यहाँ के मूलवासी सदान भाई भी इसे धूम-धाम से मनाते हैं यहाँ सबसे बड़ी दुःख की बात यह है कि इस आधुनिकता की दौड़ में अपने को प्रतिस्पर्धा में डालकर अपने भाषा और संस्कृति एवं परम्परा से पूर्वजों द्वारा पर्व-त्योहार को मनाने का नेग-दस्तूर, पूजा-पाठ तथा गीत नाच, बाजा का ताल और विभिन्न मौसमी गाने को भूलते जा रहे हैं। इतना ही नहीं इनके हाथों से जल, जंगल, जमीन तेजी के साथ निकलते जा

रहे हैं । उनकी भाषा, संस्कृति, वेष-भूषा भी उसी गति से मिट रही है । आज चिन्ता इस बात की है इन्हें आखिर बचाया कैसे जाये? खास कर नयी पीढ़ी को, जो आज काफी तेजी से विमुख होती नजर आ रही है। उनमे भारी बिचलन है, भटकाव है, चाहे वह भाषायी भटकाव हो सांस्कृतिक अथवा सोच की व उनकी मानसिकता की, उनमें अपने समाज, धर्म और संस्कृति के प्रति अच्छे विचारों की सरिता प्रवाहित करने की आवश्यकता है ।

"आराध्य देव-वृक्ष करम" लेख में मैंने आदिवासी समाज में विभिन्न स्थानों, गाँवों, टोलों मुहल्लों में करम पर्व मनाने के नेग-दस्तूर, पूजा पाठ करने का विधि-विधान, करम कहानी को विभिन्न पेपर-पत्रिकाओं मुख्य रूप से सरना नव युवक संघ, राँची द्वारा सरहुल और करम पूर्व संध्या के शुभ अवसर पर प्रकाशित "सरना फूल" पत्रिका से संकलित किया हूँ तथा करम के शुभ अवसर पर आदिवासी अखड़ा में करम के पूजा-पाठ नेग- दस्तूर एवं विभिन्न गानों का जो विशेषकर उराँव समाज में प्रचलित है को दर्शाने का प्रयास किया है तथ्यों का उपयुक्ता के लिए क्षेत्र का प्रचलित भाषा का प्रयोग किया गया है, फिर भी विविधता तो रहेगी ही । क्योंकि थोड़ी-थोड़ी दूर पर ही भाषा में बदलाव, नेग-दस्तूर में बदलाव, गीतों के राग में तथा बाजा के ताल में बदलाव है। इसी को देहाती भाषा में "देश गुने भेष" की संज्ञा दी गयी है ।

इस अत्यन्त प्राचीन आदिवासियों की विस्तृत इतिहास के आभाव में उनके लोक गीत ही एक ऐसी माध्यम है जिसके द्वारा उनके रीति-रिवाज और उनकी जीवन पद्धति के संबंध में प्रयाप्त सामग्री उपलब्ध करायी जा सकती है। मैंने इस आराध्य देव-वृक्ष करम पर्व को मनाने के सारे नेग-दस्तूर विभिन्न गीतों, बाजा के तालों को लिखित रूप देने का भरसक प्रयास किया है, जो कुछ क्षेत्रीय आधार पर आधारित है। मैं ऐसा तो कभी नहीं मानता हूँ कि मैं जो भी लिख दिया हूँ वह सभी दृष्टिकोण से परिपूर्ण है लेकिन हाँ हर तथ्यों को सामने रखने में भी कतई कोई कोताही नहीं बरती गयी है। इस संबंध में मेरा खास मकसद है कि करम और करम कहानी के संबंध में एक ही सही निचोड़ और एकरूपता समाज के सामने आय, जो भावी पीढ़ी के लिए पथ-प्रदर्शक बने । मैं आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास करता हूँ कि पाठक गण इसे जरूर पंसद करेंगे । अगर कहीं भी कोई कमी बेसी होती है, तो

पाठक गणों का सुझाव सदा स्वीकार्य है। अन्त में मेरे ओर से सभी आदिवासी और सदान भाइयों को करम पर्व की इस पुनीत बेला में हार्दिक शुभ कामनाएँ ।

जय झारखण्ड

लेखक

श्री सरन उराँव, एम.ए., एल.एल.बी.
वरीय लेखाकार
महालेखाकार का कार्यालय (लेखा एवं हक) 1
झारखण्ड, राँची
ग्राम हेहल पावा टोली, राँची
पो. हेहल, जिला राँची (झारखण्ड)

❑❑❑

चाला अखड़ा खोड़हा हेहल पावा टोली का संक्षिप्त परिचय

आज दिनांक 30.03.1998 दिन सोमवार को प्रकृति पर्व सरहुल के शुभअवसर पर हेहल पावा टोली राँची के एक छोटा सा परती भूखण्ड में चट्टान के उपर एक चाला अखड़ा खोड़हा का विधिवत डंडा-कट्टा भख कट्टी पूजा अर्चना कर, माननीय पाहन श्री दुगा उराँव, ग्राम- पारसा, पो.ओ. लेटे, थाना लापुँग, जिला रांची के कर कमलों द्वारा स्थापना का कार्य सम्पन्न हुआ। वहीं पर एक सरना झंडा गाड़ कर नियमानुसार साल फूल और प्रसाद चढ़ाया गया। उसके बाद टोला मुहल्ला के युवा-युवतियों द्वारा अपना संस्कृति का नाच-गान चाला अखड़ा में देर तक चलता रहा।

इस चाला अखड़ा खोड़हा का मूल उद्देश्य अपनी भाषा, संस्कृति पर्व-त्योहारों के नेग-दस्तूर, रीति-रिवाज, गीत, कला और साहित्य को समाज में बचाये रखने का एक दृढ़ संकल्प है। उसी दिन से प्रत्येक रविवार को वहाँ के बच्चों को एक घंटा के लिए कुड़ुख सीखाने का कार्यक्रम कुछ दिनों तक चलता रहा। इसी दरमियान चाला अखड़ा खोड़हा के अध्यक्ष बन्दी उराँव के प्रयासों से दिनांक 15.11.2000 दिन बुधवार को भगवान शहीद वीर बिरसा मुन्डा के जन्म दिन के उपलक्ष्य में ग्रामीण बच्चे-बच्चियों का उम्रवार ग्रुप बनाकर बिरसा के संबंध में विभिन्न विषयों पर प्रतियोगिता का आयोजन किया गया -

1) ग्रुप (क) बिरसा भगवान का चित्र बनाने का प्रतियोगिता में क्रमशः प्रथम जितेन्द्र उराँव, द्वितीय सौरभ कुमार एवं तृतीय स्थान संतोष उराँव को प्राप्त हुआ, ग्रुप (क) (ब) में राम कृष्ण उराँव को प्रथम स्थान प्राप्त हुआ।

2) ग्रुप (ख) बिरसा भगवान के संबंध में भाषण प्रतियोगिता में प्रथम राहुल मिंज, द्वितीय रश्मि मिंज एवं तृतीय स्थान सुमन प्रभात कुजूर को प्राप्त हुआ।

3) ग्रुप (ग) बिरसा के संबंध में लोकगीत प्रतियोगिता में प्रथम सुश्री बिमला मिंज, द्वितीय विनीता कुमारी एवं तृतीय स्थान लक्ष्मी तिर्की को प्राप्त हुआ ।

सभी विजयी प्रतिभागियों को कुड़ुख हिन्दी और हिन्दी कुड़ुख शब्द कोष का पुस्तक श्री बन्दी उराँव पूर्व विधायक, उपाध्यक्ष अनुसूचित जाति/जन जाति राष्ट्रीय आयोग नयी दिल्ली एवं - श्री जुरेश्वर उराँव सहायक अधीक्षक, औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान, हेहल, राँची के कर कमलों द्वारा पारितोषिक वितरण किया गया । चाला अखड़ा खोड़हा के अध्यक्ष द्वारा श्री बन्दी उराँव एवं श्री जुरेश्वर उराँव को मुन्डारी हिन्दी शब्दकोष पुस्तक की एक-एक प्रति खोड़हा की ओर से भेंट स्वरूप प्रदान किया ।

दिनांक 03.12.2000 दिन रविवार को वनवासी कल्याण केन्द्र बरियातु, राँची के सौजन्य से शहीद बिरसा मुन्डा के संबंध में एक निश्चित आयु वर्ग के बच्चों के लिए लेख, चित्रांकण एवं वाद-विवाद का प्रतियोगिता का आयोजन चाला अखड़ा खोड़हा के माध्यम से सम्पन्न हुआ । वनवासी कल्याण केन्द्र के संगठन मंत्री श्री महरंग उराँव ने बच्चों के बीच क्रमशः प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय पुरस्कार का वितरण किया ।

इसी तरह जब से इस चाला अखड़ा खोड़हा का स्थापना हुआ है तब से उसके बैनर तले समय समय पर सरना नवयुवक संघ राँची कॉलेज सभागार में आयोजित सरहुल एवं करम पूर्व संध्या समारोह में, आर.एन.डी. मेकोन द्वारा आयोजित सरहुल पूर्व संध्या समारोह में एवं उत्तरी कर्णपुरा डकरा में सरहुल के उपलक्ष में आयोजित समारोह में अपना संस्कृति दल के साथ पदार्पण करती आ रही है। खोड़हा अभी बिल्कुल बाल्य अवस्था में है। इसको फलने-फूलने में अभी कुछ समय लगेगा । चाला अखड़ा खोड़हा के सदस्यगण अपनी बहुआयामी उद्देश्यों के मूल में सरना समाज के लोगों को संगठित करना, धार्मिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक पहलुओं के प्रति रूचि विकसित करना, पर्व-त्योहार आदि अवसरों को सुव्यवस्थित एवं संगठित रूप से मनाने हेतु प्रेरित करने का कार्य करेगा तथा इस पुनीत कार्य के लिए समाज के हर वर्ग के लोगों से सहर्ष सहयोग की भी अपेक्षा रखता है तथा

सरना समाज के अच्छे भविष्य की शुभ कामना करता है, करम महोत्सव के अवसर पर सबको हार्दिक बधाई देता है ।

"जय-सरना, जय-करम, जय धरम"

चाला अखड़ा खोड़हा के कार्यकारिणी सदस्य गण

संरक्षक मंडल

डा. प्रकाश चन्द्र उराँव, प्रो. गामा तिग्गा, श्री सरन उराँव, श्री अहलाद उराँव, श्री राम किशुन उराँव, श्री चम्पा उराँव, श्री सुरेश उराँव, श्री हिन्दराज उराँव, श्री शिबु उराँव, श्री गोबिन्द उराँव, श्री दानिएल मिंज एवं मंगरा उराँव।

अध्यक्ष - **बन्दी उराँव**
उपाध्यक्ष - **प्रकाश तिर्की**
सचिव - **राम प्रताप भगत**
सह सचिव - **कृष्ण टोप्पो**
कोषाध्यक्ष - **सुरेन्द्र भगत**
सह कोषाध्यक्ष - **विश्वनाथ उराँव**

सदस्यगण : विनोद खलखो, नवनीत उराँव, विकास उराँव, सुनील गाड़ी, दीपक उराँव, चन्दा गाड़ी, अशोक मिंज, ब्रहमदेव उराँव, छोटू खलखो, विजय उराँव, अरमेन्द्र उराँव, वालटर होरो, राहुल मिंज, बन्दी तिर्की, सन्दीप तिर्की

एवं

नवयुवक सरना समिति हेहल, राँची-5 के तदर्थ कार्यकारिणी के पदाधिकारी गण

संरक्षक मंडल :

श्री बिरसा उराँव (भूतपूर्व मुखिया), श्री बन्दी उराँव (भूतपूर्व विध ायक), श्री जुरेश्वर उराँव भूत पूर्व सहायक अधीक्षक, औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान हेहल, श्री सरन उराँव वरीय लेखाकार ए.जी. झारखण्ड राँची, श्री ध र्मशाह उराँव जिला प्रोग्राम पदाधिकारी, श्री लालु उराँव बैंक प्रबंधक ग्रामीण बैंक, श्री धनी उराँव वरीय लेखाकार ए.जी. झारखण्ड राँची, डा. प्रकाश चन्द्र उराँव निदेशक ज.जा.शो.सं., मोरहाबादी राँची, डा० अरूण उराँव आई.पी. एस., श्री तेम्बा उराँव वरीय लेखापाल, श्री सुका उराँव भूतपूर्व परसनल

ऑफिसर एच.ई.सी. राँची, श्री सुशील उराँव भूतपूर्व उत्पाद निरीक्षक, श्री आनन्द, तिर्की, श्री महादेव उराँव श्री राम किशुन उराँव, श्री सुरेश उराँव, श्री अहलाद उराँव, श्री चम्पा उराँव, श्री बुधराम उराँव, श्री जगबन्धन उराँव, श्री शिबु उराँव ।

अध्यक्ष - **बन्दी उराँव**
उपाध्यक्ष - **गौरव उराँव**
सचिव - **राकेश उराँव**
सह सचिव - **मृत**

कोषाध्यक्ष - **श्री पंचम कु. भगत**
सह-कोषाध्यक्ष - **विजय तिर्की**
अंकेक्षक - **प्रकाश तिर्की**

सदस्यगण

सुरेन्द्र भगत, रामप्रताप भगत, विनोद उराँव, जगदीस भगत, जितेश्वर भगत, समराय कच्छप, महोदव टोप्पो, नवीन उराँव, अरूण एक्का, आनन्द बेक, नवनीत कच्छप, संजय गाड़ी, विश्वनाथ उराँव, राहुल मिंज, पवन प्रकाश कुजूर, बन्दी उराँव

अध्यक्ष

शरण (पंजीकरण संख्या - IV 1226/2004) गाहि डाड़ा

चाला अखड़ा खोड़हा, हेहल पावा टोली, राँची

संदेश

मुझे यह जान कर अति प्रसन्नता हो रही है कि चाला अखड़ा खोड़हा हेहल पावा टोली शरण (पंजीकरण संख्या - IV 1226/2004) गाहि डाड़ा राँची के प्रयास से "आराध्य देव-वृक्ष करम" के द्वितीय संस्करण कुछ अंशिक संशोधन के साथ आपके सामने जल्द ही प्रस्तुत किया जा रहा है । जिसके माध्यम से समाज को अपने जाति, धर्म, संस्कृति पर्व-त्योहारों के नेग-दस्तूर, रीति-रिवाज को समझने और अनुकरण करने में अधिक मदद मिलेगी।

मैं सभी झारखण्ड बासियों को इस पवन करम महोत्सव के शुभ अवसर पर संस्था की ओर से हार्दिक बधाई देता हूँ ।

\- बन्दी उराँव

जुरेश्वर उराँव
से.नि., सहायक अधीक्षक,
सदस्य-संरक्षण मण्डली,
नवयुवक सरना समिति,
हेहल, राँची-5

लक्ष्मी कुटीर
हेहल, राँची - 5

दिनांक - 17.09.02

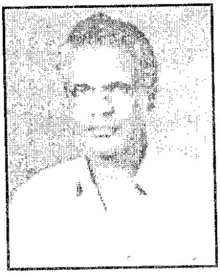

शुभ संदेश

आपार प्रसन्ता हो रही है कि नव-सृजित झारखण्ड राज्य के द्विवर्षीय "करम त्योहार" के शुभ अवसर पर श्री सरन उराँव द्वारा लिखित "आराध्यदेव-वृक्ष करम" जो इस भागदौड़ और प्रतिस्पर्द्धा की दुनिया में, जब सभी समाज में आधुनिकता का समावेश हो गया है, वैसे समय में सामाजिक परम्परा, नेग-दस्तूर, विधि-विधान, पूजा-पाठ, पर्व-त्योहार और गीत-संगीत जो लिपिवद्ध नहीं है, को दर्शया जाना हमारे समाज, विशेषकर सरना धर्मावलम्बियों की नयी पीढ़ी के लिए मार्गदर्शन का कार्य करेगा । क्षेत्रीय आधार पर विविधता में एकरूपता लाने का मार्ग प्रसस्त करेगा एवं हमारे समाज की धरोहर को लुप्त होने से बचाने का कार्य भी करेगा ।

इस महान प्रयास के लिए "नवयुवक सरना-समिति" के संरक्षक मण्डली की ओर से हार्दिक शुभकामनाएं ।

- *जुरेश्वर उराँव*

बन्दी उराँव
पूर्व आई.पी.एस.पदा.
पूर्व उपाध्यक्ष अ.जा./अ.ज.जा. आयोग
भारत सरकार
पूर्व सदस्य, बिहार विधान सभा

ग्राम - दतिया
थाना - सिसई
जिला - गुमला
दिनांक - 17.09.2002

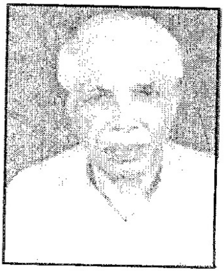

शुभ संदेश

किसी भी समाज को अपनी पहचान को बनाये रखते हुए जीवित रहने की दिशा में उसकी भाषा, संस्कृति एवं कला की अहम भूमिका होती है । आदिवासी समाज की अलिखित भाषा, संस्कृति और कला भी इसी तरह, समाज को, विशेष पहचान देते हुए इसे जिन्दगी की अनवरत धारा दे रखी है ।

गाँव की पृष्ठभूमि में रहकर समाज से संबंधित हर बिन्दु पर जानकारी रखने वाली सरन उराँव के दिल में समाज के लिए स्वभाविक श्रद्धा और प्यार है। समाज जीवन्त रहे और निरन्तर अबाध गति से चलता रहे यह उनकी हार्दिक इच्छा है। श्री उराँव अपने इस ''आराध्य देव वृक्ष करम'' पुस्तिका में, आदिवासियों, विशेष कर उराँव समाज से संबंधित परम्परागत कला एवं संस्कृति के विषय लिखकर एक अत्यन्त ही प्रशंसनीय कार्य किये हैं वर्त्तमान समय में जब लोग परिवर्तन एवं विकास के लिए अधियारी गलियों में अंधाधूंध दौड़ में व्यस्त हैं, यह और अधिक प्रासंगिक है । श्री उराँव इस महान कार्य के लिए बधाई के पात्र हैं ।

मुझे आशा नहीं पूर्ण विश्वास है कि श्री उराँव अपनी इच्छित कामना की प्राप्ति में सफल होंगे

- बन्दी उराँव

डा. प्रकाश चन्द्र उराँव
निदेशक
झारखण्ड जनजातीय कल्याण शोध संस्थान
मोरहाबादी, राँची

शुभकामना

"आराध्य देव वृक्ष करम" पुस्तक प्रेरक बनेगा ऐसा मेरा विश्वास है। कारण आज के वैज्ञानिक युग में भी जनजातीय समाज अपनी संस्कृति, सभ्यता एवं पहचान को बनाये हुए है, यह हमारे लिए गौरव एवं सम्मानीय है। आज मानव जंगल से चलकर अंतरिक्ष पर पहुँचने की कोशिश में लगा है। परन्तु जनजातीय समाज की आस्था अपनी परम्परा, प्रकृति एवं जंगलों से जुड़ी हुई है। इसी प्रकृति एवं जंगलों से जुड़ा पर्व है 'करम'

करम वृक्ष जनजातीय समाज के आराध्य देव हैं इसी 'आराध्य देव करम वृक्ष' पर श्री सरन उराँव द्वारा लिखित पुस्तक लघु पुस्तिका गागर में सागर समेटे है। यह अत्यन्त ही उत्कृष्ट एवं शोधपूरक है। निश्चय ही यह पुस्तक शोधकर्मियों, जिज्ञासुओं एवं हमारे युवा पीढ़ियों के लिए लाभदायक होगी। नव गठित झारखण्ड राज्य में यह एक अत्यन्त ही उपयोगी धरोहर सिद्ध होगी। क्योंकि 'करम पर्व' जो जनजातीय समाज के लिए अत्यंत ही महत्वपूर्ण है किन्तु इस पर्व की पूर्ण जानकारी के लिए हर कोई उत्सुक रहता है ।

श्री सरन उराँव की इस सराहनीय प्रयास के लिए मैं हार्दिक शुभकामना देता हूँ और आशा करता हूँ आगे भी समाज को एसी रचनाएं देकर लाभान्वित करते रहेंगे ।

--प्रकाश चन्द्र उराँव

विनती - 1

कुंड़ुख

आना अद्दी मुंज्जरना मलका,
नीनिम धरमे रअदय बंगा-यो,
नीनिम धरमे रअदय ।

उरमी-नुम ए-रा लगदय,
उरमीगेम जोड़गर रअदय,
कोंड़ा-कोंड़ा रअदय बंगा-यो,
कोंड़ा-कोंड़ा रअदय ।

जनम-करम चिच्चकय धरमे,
पोसआ परदआ लगदय बंगा-यो,
पोसआ परदआ लगदय ।

आशीष चिअदय उरमीनुम,
दया नन्दय उरमीमेगे,
सरना डहरेन एदआ बंगा-यो,
धरम डहरेन एदआ ।

तंगआ जिया लेखआ धरमे,
ओरमर गही जियन बंगे,
ऐ-रना लूरन चिआ बंगा-यो,
सिक्खरना लूरन चिआ ।

पापीगा रअदन पहें,
नीनिम धरमे तारओय बंगा-यो,
नीनिम जनु तारोय ।

आना अद्दी मुंज्जरना मलका,
नीनिम धरमे रअदय बंगा-यो,
नीनिम धरमे रअदय ।

विनती - 2

सिरा--सिता नाल--नु भईया-बहिन रहचर,
भईया-बहिन रहचर
गुचा हरो बेद्दागे कालोत
बरा हरो बेद्दोगे कालोत ।।

ककड़ोही लाता गंगेला ही खइड़ रहचा हरो भइरो
आसानिम नम्हय पुरखर रहचर,
नम्हय पुरखर रहचर,
गुचा हरा बेद्दागे कालोत,
बरा हरो बेद्दागे कालोत ।।

आर गुसन भइरो ईमन धरम रहचा,
सदा धरम रहचा,
गुचा हरो बेद्दागे कालोत,
बरा हरो बेद्दागे कालोत,

आर हरो भइरो निशा-पानी मला ओना लगियर,
मला ओन लगियर,
गुचा हरो बेद्दागे कालोत,
बरा हरो बेद्दागे कालोत ।।

आर हरो भइरो धर्मेस गही नामे ती,
'डंडा-कट्टा', लगियर,
'डंडा-कट्टा' लगियर,

सोझे--सोझे धरमेसिन पूजा-नना लगियर
सेवा नना लगियर,
गुचा हरो बेद्दागे कालोत,
बरा हरो बेद्दागे कालोत,

सिरा-सिता नालनु भइया-बहिन रहचर,
भइया-बहिन रहचर,
गुचा हरो बेद्दागे कालोत,
बरा हरो बेद्दागे कालोत ।

प्रार्थना

जोअर

हो

सिरमा रे सिड़बोंगा
ओते दिसुम गोमके
होयो लेका सएका
दः लेका सपा
दक् दिरि रे अम्
जियु-जोन्तु रे सम्
नेल उरूम् बनोः अले
होयो लेका सएका अम् ।।

ए सिड़बोंगा
जोअर तना ले
बिनती तना ले
जियु-जोन्तु तन
मनोआ तन
अयुम् तन
तेला लेमे

सिरमा रेन सिड़बोंगा
ओते दिसुम् गोमके
एगां अपु अमगे तन ।।

होरो तले में, जगि तले में
उरूम तलेम, केआ तले में

लुकु हड़म होन् लुकुमि बुड़ि होन्
पिलचु हड़म् होन, पिलचु बुड़ि होन्
अद् हड़म, हव्वा बुड़ि होन् ।

मुनु कड़ो रे, दः दिसुम रे
बिर-दरू, बिर तसड् को रे
मनोआ जियु-जोन्तु, उपन-जपन कोरे
लेन्डड किञ जोम् बुरू रे
कहकोम लोटोङ जाम्बु-डिपा रे
जोनोम् लेन मरं लेन मंर बुरू
उपन लेन् पो लेन् लुकु बुरू
रोहसा रे, अदम् बगान् रे
दरू लेना, मंर लेन हब्बा ।

इआ दोरआ तला, इआ बन्देला तला
एन् होन्को, एन् जिउको
नितिर् लेन पसिर लेन
तड़ए बा दिसुम रे

जोअर

जोअर

जोअर तञ्
सिड़बोंगा ।।

विनती दुरङ

मुण्डारी

ओसमि् बोंग भगवान अम्
परमेश्वर अल्ला अम्

सरना रेनियो अम्
मंदिर रेनियो अम्
गिरिजा मस्जिद रेनियो अम्
ओ ....

आले होनको नङएंगा अपु अम्
हगा बन्धु अम सोंगे साथी अम्
रेंगे तेतङरे जोमेया ओमोनिः अम्
सेंणा सोंङ तनि गुरू ज्ञानी अम्
ओ ....

नुबते परकालेक अम्
मसकलते इदिलेम अम्
सेणाते सिंगरलेम म्
धोरोम होराते इदिलेम अम
ओ ....

मरङ बुरू देसाउली
इकिर बुरू बोंग अम्
अम गेले अर्जियम तन
अम गेले विनितयम तन
सुतुम संगि मेन्दो मियदगे अम
ओ ....

नेहोर जोहार

संताल

जोहार जोहार आयो, जोहार माराङ बुरू,
नेहोर जोहार तालेदो आताङ दाराम बिन ।
आले लेलहा, कांड़ा मानमी, को
नेहोर जोहार तालेदो आताङ दाराम बिन ।।

कामी कामीते कामी पोरोम ले,
दया कातेबिन इका कालेया ।
आबिनाः आयुर ते आबिना डाहार ते
ताड़ाम लाहा जोगेर एरेड कालेया ।।

सेरमा सागिञ खोन राहला रिमिल लेका,
आले तालारे देसे नुपेल गोदोः बिन ।
फागुन बोंगा रे, मुलुक तोरा रे,
सारजोम वाहा भात कोमे गेले आताङ बोंगा ।।

जोहार जोहार बोंगा जोहार नातू बोंगा,
नेहोर जोहार ताले गाताङकाः पे ।
जोहार दिसोम पेड़ा जोहार नातू पेड़ा,
नेहोर जोहार ताले नाताङकाः पे ।।

प्रार्थना

खड़िया

हे दुलार आपा ओसंगईज ताय
आ-म-गा आईजडेम दुलार आपा
आ-म-गा आईज्डेम ।।

झाड़ी तेगा पाडोम आईज्डोम,
झाड़ी तेगा योतोजडेम दुलार आपा;
झाड़ी खोऽते कोना-कोना ते आईज्डेम दुलार आपा ।।

जन्न कर्म तेरीव आपा,
बुयोब रो माऽमायोब दुलार आपा
बुयोब रो माऽमायोब ।।

लेबुई ताम झाड़ी तेगा,
आशिष तेरतेम झाड़ी दुलार तेगा,
केलोम गोऽ झुंड वताय तेन आपा ।।

आमाऽजियोम लेखे दुलार आपा,
झाड़ी याऽ जियोम ते,
मोनाऽ लुईर तेरम-दुलार आपा ।।

लेबुई ताम झाड़ी तेगा,
सेनेल एलाऽ ओन्डोरे-दुलार आपा ।।
अर्जी एलाऽ ओन्डोरे ।।

पापी को आई जलेगा मगर
अ-म-गा उद्धरेम-दुलार आपा
आ-म-गा उद्धरेम ।।

"आराध्य देव-वृक्ष करम"

इस धरती पर शुरू से ही आदिवासी भादो शुक्ल पक्ष एकादशी को करम का त्योहार को बड़ी धूम-धाम से मनाते आ रहे हैं । कितना साल पहले से मनाते आ रहें है उसका कोई ठोस लिखित प्रमाण उपलब्ध नहीं है । यह प्रकृति पर्व है। इस प्रकृति पर्व को यहाँ के मूल वासी आदिवासी और सदान बड़ी पवित्रता से मनाते आ रहे हैं । इसमें आराध्य देव-वृक्ष करम की डाली को अखाड़ा में गाड़कर बहुत विधि-विधान और पवित्रता के साथ व्रत-पूजा करते हैं ।

आखिर करम पेड़ की डाली को ही क्यों पूजा करते हैं ?

यहाँ एक प्रश्न यह उठता है कि आखिर आदिवासी करम पेड़ की डाली को ही क्यों अखाड़ा में गाड़ते हैं और उसकी पूजा करते हैं? करम मात्र एक पेड़ ही नहीं बल्कि आराध्य देव-वृक्ष है। वह आदिवासियों का अस्तित्व रक्षक आध्यात्मिक जीवन-दर्शन और सामाजिक परम्पराओं का प्रतीक है। वह तो उनकी जीवन परम्पराओं में ऐसा समा गया है कि उसे जीवन पहलुओं से अलग समझ पाना कतई संभव नहीं है । समग्र रूप से वह हमारे सम्पूर्ण जीवन मूल्यों का नायक भी है, जिसे हम आत्मिक सुख शांति और अलौकि दिव्य शक्ति की अनुभूति करते हैं । यही वजह है कि प्रकृति पुजारी और उसके प्रति अटूट आस्था और विश्वास रखने वाले आदिवासी समुदाय करम को धार्मिक त्योहार के रूप में आत्मसात कर लिये हैं ।

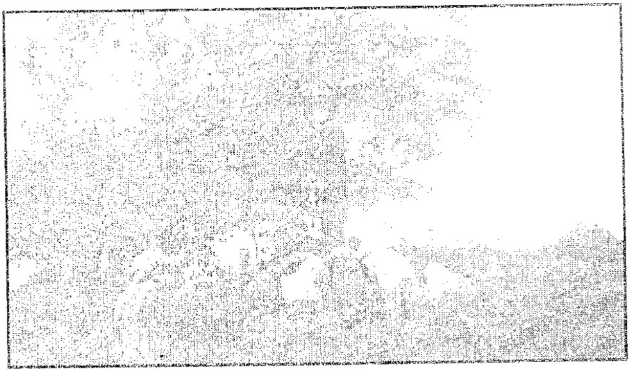

ऐसे तो आदिवासियों के बीच में तो असाढ़ शुक्ल पक्ष द्वितीय से ही रंथ चलने के बाद से करम गीत का बछौर घर, आंगन, खेत, टांड़ में सुनने को मिलता है। भादो माह की इस सुनहरी हरियाली में करम गीत के मधुर तान सबके मन को मुग्ध किये बिना नहीं छोड़ता है। कुछ गीत इस प्रकार हैं -

1) भादो का एकादशी करम गाड़ाय हो,
दुतिया ही रंथ चलाय हो ..... ।।1।।

गाँव केरा पहान राजा करम गाड़य हो,
राजा ठाकुर रंथ चलाय हो ...... ।।2।।

2) चकोड़ा जे जन्मल हिरयार रे,
चाकोड़ा फूल बिनू सोभय हो,
चाकोड़ा फरल बिनू सोभय ...... ।।1।।

से चाकोड़ा फारलैं झाबारलैं डाईर रे,
से चाकोड़ा फूल बिनू सोभय हो,
से चकोड़ा फरल बिनू सोभय ..... ।।2।।

से चाकोड़ा दाइल मैंया झोरे-झोरे रे,
दमेदा के मने नहीं भारय हो, ...2..... ।।3।।

3) लगे बबु मन्दरिया मन्देरा बाजाव रे,
लगे मइया खाला दोना करा हो, ... ।।1।।

खाला दोना भेल साइयाँ
पोरोस ना भेल रे, साइयाँ के मने नहीं भारय हो...।।2।।

4) माटी केरा मन्देरा पीतर केरा झांझझ रे
झमकी झमकी करम खेलैं हो .... ।।1।।

केऊ लेलैं मन्देरा, केऊ लेलैं झांझझ रे
झमकी झमकी करम खेलैं हो .... ।।2।।

भइया लेलैं मन्देरा, सइयाँ लेलैं झांझझ रे
बयनी लेलैं अपना सिंगार हो .... ।।3।।

5) हाथे बन्दुक राजा,
सराहरा गाछ रे
चलु राजा शिकारो खेले हो .... ।।1।।

हाथे गुलाईल राजा,
सराहरा गाछ रे,
चलु राजा चराईयो मारे हो .... ।।2।।

सोब चराई मारू राजा,
बिना-बिछी मारू रे,
कोइलो चराईया मति मारू रे .... ।।3।।

कोइलो का बोली राजा,
बड़ी रे मिठास रे,
कोइलो चराईया मति मारू रे .... ।।4।।

6) बारहो महीना जितिया रे करम .....
करम गेलैं बड़ा दूर हो ......
करम गेलैं बड़ा दूर हो ...... ।।2।।

करम का लोभे,
हड़िया मई धारलो,
करम गेलैं बड़ा दूर हो ...... ।।2।।

करम का लोभे,
रोटिया मई पकालो,
करम गेलैं बड़ा दूर हो .... ।।3।।

मांदर का ताल

शुरू करना - तांयक दथुंग थुंग तांयक दथुंग .....
घुराना - दंग तांयक दतंग थींग नंतग
दतंग थींग दगथुंग दंग थींग तांयक दथुंग ....

7) चला-चला शिकार खेले भाइया रे,
चला-चला हरिण मारे हो .... ।।1।।

कोन बाने शिकार खेलैं भाइया रे ......,
कोन बाने हरिण मरय हो .... ॥2॥

एने-बाने शिकार खेलैं भाइया रे .....,
बीच बाने हरिण मारय हो ...... ॥3॥

सोव शिकराइत आवय नाचते-डेगते,
मोरा देवरा मुँह सुखी आवय हो .... ॥4॥

लोऊ देवरा गोड़ धोऊ, लेऊ देवरा पिरहा बैसु,
कही चालु शिकार का हाल हो ...... ॥5॥

ना हमें गोड़ धोवब, ना हमें पिरहा बैठव,
कही घलब शिकार का हाल हो ...... ॥6॥

तोहरों पिया भाऊजी, बड़ा रंग रसिका,
अना छोइड़ बना शिकार खेलै हों ...... ॥7॥

हरिण/रोही का सबदे तीर मई चलालो,
लगी गेला पीठ का भाई हो .... ॥8॥

कचेरा के कटी कइट सरहा मई बनालो,
भाइया मोर के देबो अगिन मुख हो ..... ॥9॥

तोहें लेबे दादा आसन गाछ रे,
हमें लेबो चान्दन गाछ हों .... ॥10॥

कोन देश से आय गेलैं आँधी रे बांरडो,
अगिया के तो देलैं धन्धकाय हो .... ॥11॥

पूरब देश से आय गेलैं आँधी रे बांरडो,
अगिया के तो देलैं धन्धकाय हो .... ॥12॥

मांस जे गली-गइल भुइयाँय परी गेले रे,
हड़ा के तो ले गेलैं बनारस हो .... ॥13॥

8) कोन दाहे हेलो कारय भाइया रे,
कोन दाहे मच्छईर मारय हो .... ॥1॥

शियल दाहे हेलो कारय भाइया रे,
मंगर दाहे मच्छईर मारय हो .... ॥2॥

9) कौवा रे कौवा,
सरगे जे मेड़ारय
कही देबे परदेशक हाल हो .... ।।1।।

अपना पुरूख दइया,
गेलैं परदेशक हो,
कही देबे परदेशक हाल हो ...... ।।2।।

मान्दर बजता है :-
शुरू- दंगदा दाँ थींग, ताँयक दथुंग दाँ थींग ....
घुरान- नतांग दांग थींग, थिंदग नतंग दाँ थींग,
ताँयक दथुंग दाँ थींग -
थिंदग नतंग दथुंग, दंगदा नतंग दथुंग,
दंग दाँ थींग, थिदंग नतंग दथुंग, दंगदा तनग दथुंग .....

कुछ सावनीय गीत जो करम के अवसर पर विशेष रूप से गाया जाता है - (10) (11) एवं (12)

10) कोने बने अहिरा,
गया रे चरावय,
बेजोली तोरे लोभे भला,
कोन बाने पानी पियावय,
बेजोली तोरे लोभे ..... ।।1।।

रने-बने अहिरा,
गया रे चरावय,
बेजोली तोरे लोभे भला,
कोन बाने पानी पियावय,
बेजोली तोरे लोभे .... ।।2।।

11) मुनी गाय मुनी गाय,
बड़ा रे दुलरिया,
मुनी गाय बछरू बोलवय हो .... ।।1।।

दुहे लागल अहिरा,
मलके लगल दूध रे,
झलके लगल हाथ का बेरा हो ...... ।।2।।

12) एका जोंखस,
काड़रू खापदस,
कुल्ला नू बकुला टैंया हो .... ।।1।।
चेंड़ा जोखस, काड़रू खापदस,
कुल्ला नू बाकुला टैंया हो ...... ।।2।।
चिओस बाच-बाच
असेरा नन्जकन, (हेदे-हेदे मांञ्जकन)
धिरीजा ननय पेल्लो बअदस हो .... ।।3।।

अर्थ :

कोई लड़का काड़ा चरा रहा है उसके छाता (बाँस छाता) में बगुला का पंख का टैंया खोसा हुआ है । कुंवारा लड़का काड़ा चरा रहा है, उसके छाता में बगुला का टैंया खोसा हुआ है। लड़की कहती है कि उस टैंया को मुझे देगा कहकर मैं अपने आप में बहुत असरा और भरोसा किया, उस टैंया को मांगने के बहाने उससे सम्पर्क में आकर अपना प्रेम संबंध को बढ़ाना चाहती थी मगर वह कहता है अभी तुम कुछ दिन धीरज धरो ।

मान्दर बजाता है :-
शुरू-दथुंग दंग दथुंग, थींग दंग दथुंग,
घुराना-दंग दाँयक थींग, थींदग नतंग दाँयक थींग,
दथुंग दंग दथुंग ....

हमारे पूर्वज शुरू से ही प्रकृति पुजारी थे । वे इतनी दूरदर्शिता थे और जानते थे कि एक समय ऐसा आयेगा कि प्रकृति में पर्यावरण संतुलन बिगड़ जायेगा और मनुष्य तथा अन्य जीव जन्तुओं को धरती पर जीना बहुत कठीन हो जायेगा । संभवतः इसीलिए विभिन्न पर्व-त्योहारों में धर्म के साथ पेड़-पौधों को जोड़ कर, उसको पूजा अर्चना करते आ रहे हैं । जैसे- सरहुल में साल पेड़ का फूल, करम में करम पेड़ की डाली कदलेटा में भेलवा पेड़ की डाली, हरियारी में सारे अनाज की हरियाली और नवाखानी

में नये अनाजों के फल की पूजा करते हैं, इसके अलावे आम, बड़, पीपल, गुलैंची और तुलसी की तो पूजा करते ही हैं । आदिवासियों का प्रकृति के साथ विशेष आकर्षण है। आराध्य देव वृक्ष करम के संबंध में उनका मानना है कि करम डाल का सेवा कर ही मानव को सुख और शांति मिली है। उसकी डाल को पूजा कर मनुष्य अपने मनोकामनाओं की पूर्ति की है। जैसे यह भी कहा जाता है कि रोहतास में उराँव राजा का गढ़ था। उल्लेखों से पता चलता है कि रोहतास गढ़ सभी दृष्टि से सम्पन्न था । सभी लोग सुखी थे। धन सम्पति और हीरे जवाहरातों से परिपूर्ण था समृद्धि का प्रचार-प्रसार दूर-दूर तक फैल चुका था दुश्मनों का इसकी समृद्धि देखा नहीं गया और उराँव राजा को पराजित कर उराँवों को रोहतास गढ़ से भगाया जाने लगा। ऐसी परिस्थिति में वे रोहतास के कीले से निकल-निकल कर जंगल की ओर भागे । ऐसा ही उन्हें पहले भी अपने निवास स्थान से अनेको बार दुश्मनों द्वारा भगाया गया । इसी तरह भागने के क्रम में एक बार दुश्मनों ने जंगल की ओर भी उसका पीछा किया । उन्हें कहीं आश्रय का ठिकाना नहीं मिल रहा था । उसी बीच जंगल में एक बड़ा सा झालझबरा करम पेड़ उन्हें दिखाई दिया, जिसका डाल जमीन से सटा हुआ था । भीतर एक बड़ा खोड़हर था उसी में सभी उराँव आदिवासी छिप गये । बहुत प्रयास करने के बावजूद भी दूश्मनों की नजर उनलोगों पर नहीं पड़ी और सभी बच निकले । उसी दिन वे समझ गये कि यही करम का पेड़ हमलोगों की जीवन का रक्षा की है। इसलिए हमें इसकी पूजा करनी चाहिए। उस दिन भादो शुक्ल पक्ष एकादशी का दिन था वे कहीं बाहर जा नहीं सके इसलिए गुफा के भीतर जो करम पेड़ के जड़ में था कुछ मकई वगैरह का जन्मा हुआ पौध और धूप के अभाव में पीला दिखाई दिया । उसी को उस करम पेड़ पर फूल के रूप में चढ़ा कर पूजा अर्चना किया गया । संभवतः इसी से प्रेरित हो कर यहां के आदिवासी और सदान करम पेड़ की डाली को अखड़ा में गाड़ कर भादो शुक्ल पक्ष एकादशी को बड़ा श्रद्धा और भक्ति के साथ पूजा और सेवा करते आ रहे हैं ऐसा भी कहा जाता है कि भगवान महादेव को खुश करने के लिए पारवती भी सात-साल तक जिस पेड़ के नीचे उपवास कर तपस्या की और व्रत रखी थी, वह पेड़ भी करम पेड़ ही था । इसीलिए जितने भी करम उपासल लड़कों को "महादेव" एवं करम उपासल

लड़कियों को "पारवती" कहते हैं तथा करम को "करम राजा" तथा "करम गोसाई" की उपाधि भी दिया गया है । यहाँ पर रोहतास का घटना से करम पर्व मनाने का शुरूआत हुआ, कहना बिल्कुल युक्तिसंगत नहीं है। इसके पूर्व भी हमारे पूर्वज जहाँ कहीं भी थे, करम पर्व को मनाते आ रहे थे ।

करम ही मानव का असली धरम है :- इस महान भारत की संस्कृति दुनिया का सबसे पुराना संस्कृति है। यहाँ करम की प्रधानता है। यहाँ के आदिवासियों के बीच करम का कितना बड़ा महत्वपूर्ण स्थान है वो तो यहाँ के करम दिन ही देखने को मिलता है। करम ही यहाँ की जिन्दगी है। करम कभी पुराना नहीं होता न ही करम का फल भी मिटता है। "करम ही मानव का असली धरम है" जिन्दगी का असली मन्तर मनुष्य का करम में हैं। करम के बिना मनुष्य जीने की बात सोच तक नहीं सकता है। भारत वर्ष धरम प्रधान देश है। यहाँ हर करम के साथ धरम का मेल है। इसलिए हर कुंवारी बहन अपने भाई के राज्य में अच्छी बरसा, अन्न-धन्न, सांस-बराकत और सुख-शान्ति तथा समृद्धि के लिए उपवास व्रत रखती है। करम की कहानी में बुराई पर अच्छाई की जीत की शिक्षा मिलती है। उसके आधार पर हम अपना करम पर विश्वास करते हैं। हम अगर अच्छा करम करेंगे तो अच्छा फल मिलेगा और बुरा करेंगे तो उसका परिणाम भी बुरा ही होगा। धर्म ग्रंथ गीता में भी यही उपदेश मिलता है कि "कर्म ही धर्म है" ।

अभी तक हम आदिवासियों का कोई ठोस लिखित बुनियादी इतिहास नहीं है। हम परम्परा से पूर्वजों द्वारा पर्व-त्योहारों को मनाने का

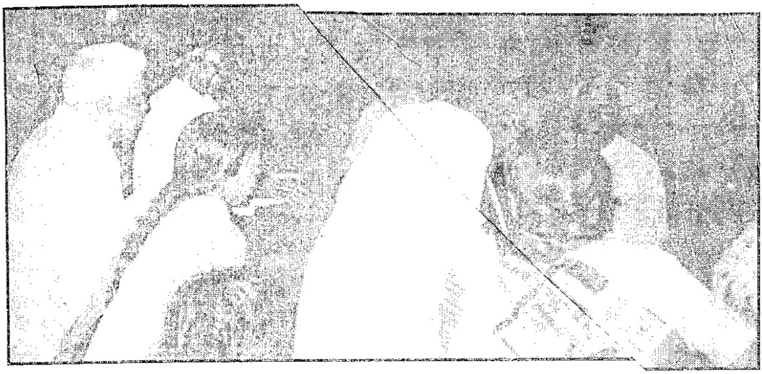

नेग-दस्तूर, पूजा-पाठ तथा गीत गाबिन्द और बाजा के ताल का अनुकरण करते आ रहे हैं। इसीलिए जगह विशेष पर कुछ अंशों में कुछ फर्क मालूम पड़ता है। उसे हम साधारण देहाती बोल-चाल की भाषा में ''देश गुने भेष'' कहते हैं। यहाँ लिखित करम से संबंधित तथ्य विशेषकर उराँव समाज में प्रचलित परम्पराओं के आधार पर तथा राँची जिला के लापुँग, बेड़ा थाना के क्षेत्रीय आधार पर आधारित है । लेकिन अब हम आधुनिकता की इस दौड़ में अपने को प्रतिस्पर्धा में डालकर अपने भाषा और संस्कृति के सारे नेग-दस्तूर, गीत-नाच तथा बाजा का ताल इत्यादि को बिल्कुल गर्त की ओर ले जा रहे हैं, आदिवासियों का साल के बारहो मास के लिए अलग-अलग गीत का राग और बाजा का ताल है। जैसे - सरहुल, जेठ जतरा, बरोया, धुरिया, असरी, सावनिया, करम, माठा, जरगा, जादुर, अगहन जतरा, शादी, लहसुआ तथा ठाड़ लहसुआ इत्यादि। लेकिन अब हम उसे बिल्कुल भूल जा रहे हैं, जो हमारे और हमारे आदिवासी समाज के लिए बहुत दुखदायी बात है। अब हम अपनी भाषा और संस्कृति को भूलते जा रहे है, जिसे हमारी आदिवासियत की पहचान नष्ट होता जा रहा है। इसलिए किसी ने ठीक ही कहा है अगर किसी समाज को बर्बाद करना है तो उसका भाषा और संस्कृति को नष्ट कर दो, वह समाज स्वतः बर्बाद हो जायेगा इसलिए हम सभी को इस बर्बादी को रोकने के लिए मिल-जुल कर प्रयास करने की अति आवश्यकता है।

राज करम के लिए जवा उठाना :-

राज करम ही यहाँ का प्रमुख करम है । राज करम के लिए तीज के बासी दिन जवा उठाया जाता है। राज करम के अतिरिक्त भी यहाँ अनेकों करम मनाये जाते हैं । जैसे-धुरिया करम, ईन्द करम, सत करम, ईन्दबासी करम, ढ़िढ़री करम, डींडा करम, कडरू करम, जितिया करम, दशहरा करम, सोहराई करम, अहवांरी करम तथा और एक विशेष करम होता है, उसे ''बुढ़िया करम'' कुड़ुख में उसे ''पच्चो करम'' कहते हैं । इसे कहीं कहीं रोग करम भी कहते हैं ।

बुढ़िया करम :- बुढ़िया करम को बुढ़ा-बुढ़ी लोग ही गाड़ते हैं और खेल-खूंद करते हैं इसलिए उसे बुढ़िया करम कहा गया है । सभी नेग चार राज करम के समान ही होता है। इसे कहीं-कहीं रोग करम भी कहते

हैं। करम विसर्जन करने जाते समय सभी अपने-अपने घर के लूंडा-बेंडा को खपड़ा में उठा कर सीमाना में लेकर फेंक देते हैं । उसका विश्वास है कि उसके साथ सभी रोग-पाप दूर चला जाय। यह करम जेठ महीन के आखरी-आखरी में मनाया जाता है । भीषण गर्मी से तपती भूमि वर्षा का पानी के लिए व्याकुल रहती है। कभी-कभी भंडार कोना से लाल आँधी लिए तेज हवा के साथ कुछ-कुछ बारिस भी हो जाती है। प्रकृति का एक करम गीत जो प्राय: बुढ़िया करम के शुभअवसर पर ही गाया जाता है कुड़ुख भाषा में -

एन्देरगे महरा तिरयों तारदय,
ओय मला किर्री आंवगे तीरयों तारदन,
एन्देगे ओय मला किर्रदी,
घांसी मला खुर्री आंवगें मला किर्रेन,
एन्देरगे घांसी मलाा खुर्रदी,
चेंप मला पुं-यी आवंगे मला खुर्रेन,
एन्देरगे चेंप मला पुं-इदी
मुखा मला चींखी आंवगे मला पुंइयेन,
एन्देरगे मुखा मलाचींखदी,
डोन्डो गुड्ठी परमी आंवगे मला चीखने,

अर्थ :-

प्र. अहिर (ग्वाला) तुम क्यों बांसुरी बजाते हो ?
उ. हमारी गाय नहीं लौटती है इसलिए बांसुरी बजाता हूँ

प्र. क्यों गाय तुम क्यों नहीं लौटती हो ?
उ. अभी घास नहीं बढ़ा है इसलिए नहीं लौटती हूँ ।

प्र. क्यों घास तुम क्यों नहीं बढ़ते हो ?
उ. पानी नहीं बरसा है इसलिए मैं नहीं बढ़ा हूँ ।

प्र. क्यों पानी तुम क्यों नहीं बरसते हो ?
उ. मेढ़क नहीं टरटराते हैं इसलिए नहीं बरसता हूँ ।

प्र. क्यों मेढ़क तुम क्यों नहीं टरटराते हो ?
उ. ढ़ोड़ (साँप) पकड़ कर निगल जाता है इसलिए नहीं टरटराते हैं।

अब मैं राज करम का जवा धरने तरफ आता हूँ । जैसे मैंने कहा कि तीज के बासी दिन पहले ही रात को जौ, मकई, सुरगुजा इत्यादि अनाजों को पानी में फुला कर रखते हैं । सवेरे कुंवारी लड़कियाँ स्नान करके नदी-ढोड़हा से टोकरी में कहीं कहीं पतल का खाला में बालू लाते हैं उसमें भी पवित्रता का ख्याल रखा जाता है। जहाँ से बालू उठाते हैं उपर का बालू को हटाकर बालू उठाते हैं । उस बालू को घर लाकर किसी टोकरी में या या तावा में रखकर उसमें भिंगाया हुआ अनाज विशेषकर जौ, गेहूँ, मकई को उस बालू में बोते हैं, उपर से और थोड़ा बालू देकर, सारू का पता से ढाक दिया जाता है । जो कुंवारी लड़कियाँ जवा उठाती है, वो जब तक करम का दिन नहीं पहुँचता है तब तक उसे रोज स्नान कर पानी देती है। जवा सेवा करने वाले मांस-मछली का भी सेवन नहीं करते हैं । जवा जब उग कर थोड़ा बढ़ने लगता है तो उस पर हल्दी रंगा हुआ पानी छिड़कती है, जिसे जवा का रंग हल्दी के जैसा पीला दिखाई पड़ता है। दूसरी दृष्टिकोण से हल्दी पानी शुद्धता का भी प्रतीक है। जवा अपने घर के लिए व्यक्तिगत रूप से उठाती है और एक पंच जवा होता है, उसे पाहन या महतो के घर में सामुहिक रूप से उठाया जाता है जिसे पंच जवा कहते हैं। पंच जवा को

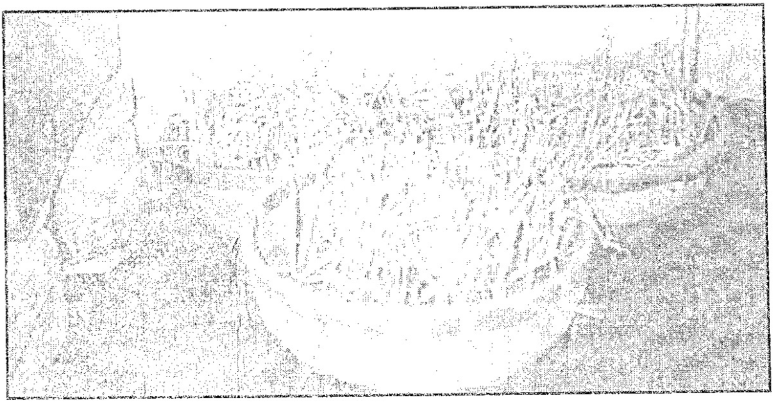

परना के दिन अखड़ा में लाकर सामूहिक रूप से उखाड़ते हैं और आशीर्वाद के रूप में सभी को बाँटते हैं । व्यक्तिगत जवा फूल को ही करम कहानी सुनने के समय करम राजा पर चढ़ाया जाता है। जवा फूल को जब तक करम मे नहीं चढ़ाते हैं तब तक उसका प्रयोग करना अवैध माना जाता है।

जवा फूल के संबंध में अनेकों उराँव करमगीत गाये जाते हैं जो इस प्रकार है –

जवा निंगहयन पेल्लो, सेवा ननय कोय,
जवा निंगहय परदी पोल्ला हो ...... ।।1।।
पैरी बिरी अम्म चिअय पेल्लो कोय,
जवा निंगहय परदी पोल्ला हो ..... ।।2।।
बालका अम्म चिअय पेल्लो कोय,
जवा निंगहय परदी पोल्ला हो .... ।।3।।

अर्थ : लड़की तुम अपना जवा को ठीक से सेवा करो, तुम्हारी जवा ठीक से नहीं बढ़ पा रहा है। तुम रोज सवेरे जवा में पानी दो, तुम्हारी जवा ठीक नहीं बढ़ पा रहा है। तुम जवा में हल्दी पानी दो तुम्हारी जवा बढ़ नहीं पा रहा है।

करम झाइल धुका राग में :

1) एका पेल्लो जवा जापचा,
हरदी पानी लगाबाचा हो ..... ।।1।।
चेड़ा पेल्लो जवा जापचा,
हरदी पानी लगाबाचा हो ..... ।।2।।

अर्थ :– कौन लड़की जवा उठायी, जवा में हल्दी पानी लगायी। डींडा लड़की (कुवांरी) जवा उठायी, जवा में हल्दी पानी लगायी ।

2) पेल्लो चिचका जवा पूंपन,
नेला गूटी जोगा बओन रे,
जनम युग जोगा बओन ...... ।।1।।
इन्ना जोगा बओन, नेला जोगाबओन
साल भइर जोगा बओन करम बेचा गे कालोन रे ।।2।।
जनम युग जोगा बओन,
करम बेचा गे कालोन रे .... ।।3।।

अर्थ : लड़की का दिया हुआ जवा फूल को मैं जनम युग जोगा कर रखूँगा । आज, कल, साल भर जोगाकर रखूँगा और करम खेलने के लिए जाऊँगा मैं लड़की का दिया हुआ जवा फूल को जनम युग जोगाकर रखूँगा और करम खेलने जाऊँगा ।

3) केकर मुड़े हरदी रंगल फेटा रे,
केकर मुड़े जवा फूल रे ..... ॥1॥
राजा का मुड़े हरदी रंगल फेटा रे,
रानी का मुड़े जवा फूल रे ...... ॥2॥

मान्दर बजता है -

शुरू - दथुंग दंगदा दंगथुंग नंतग थुंग 2
घुराना - तंगदा नतंग दंग दंगथुंग नंतग थुंग,
दथुंग दंगदा दंगथुंग नंतग थुंग ....

करम थपड़ी राग में -

जवा मई सेवा लो जितिया जवा ......
हायरे मोर जवा रस रसे बढ़े ...... ॥1॥
जवा के देबो निर्मला पानी
हायरे मोर जवा रस-रसे बढ़े ..... ॥2॥
जवा के देबो आयो के देबो,
जवा के देबो बबा के देबो
हायरे मोर जवा रस रसे बढ़े ...... ॥3॥

मान्दर बजाता है -

शुरू - थीदंग, थीदंग थीदंग .....
घुराना - थीदंग दथिंग नतंग,
थींग दथिंग नतंग,
दथुंग दथुंग नंतग .....

राज करम -

राज करम ही यहाँ की असली करम है और इसे ही सभी जगह अधिक लोग मानते हैं जग जाहीर है कि खेती पर आश्रितों के लिए भादो महीना सर्वाधिक आभाव एवं आर्थिक संकट का होता है फिर भी करम की आराधना में अपने मुखमण्डल पर स्वाभाविक खुशी और आनन्द की आभा लिए सभी बाल-बच्चे, युवा युवतियाँ, बुढ़ा-बुढ़ियाँ और नर-नारियाँ मसगूल रहते हैं । ऐसी आर्थिक अभाव की घड़ी में भी अपने बाल-बच्चों के लिए बकुला पंख का टैंया, करम उपवास के लिए करम डौड़ा, पहनने के लिए नये कपड़े एवं रीझ रंग करने के लिए मांदर का जोगाड़ बहुत ही धैर्य के साथ जुटाते हैं । करम में मान्दर का क्या महत्वपूर्ण स्थान है वो तो इस करम गीत से ही पता लगता है । करम झाइल धुका राग में -

मान्दर कीनै ललु भइया रे,
जनी किनल लेखे लगे रे ...... ।।1।।
मान्दर फूइट गेला ललु भइया रे,
जनी मोरल लेखे रे .... ।।2।।

इसी गाना को कुड़ुख में इस तरह से गाते हैं -

खे़ल खेन्दोय ललु भइया रे,
मुक्का खींदका लेखे लगो रे ..... ।।1।।
खेल खेन्दोय नेलोय बेचोय,
मुक्का खद्दन हेबेड़ोय चिओए रे ...... ।।2।।
खेल खोटरा ललु भइया रे,
मुक्का केच्चका लेखे लगो रे ..... ।।3।।
राजियर गे राजी करम बारचा,
राय एंगदा डौड़ा गेम चींखी,
हाय एंगदा किचरी गेम चींखी ..... ।।1।।

दूसरी पेठन बरा ची तो माईगो,
निंगा गे डौड़ा दिम खेदोन रे,
निंगा गे किचरी दिम खेन्दोन ...... ।।2।।

अर्थ :-

राज बासियो के लिए राज करमा, आया, हाय रे मेरी बेटी करम डौड़ा के लिए रो रही है, हयरे मेरी बेटी कपड़ा के लिए रो रही है। रहो बेटी दूसरी बाजार को आने दो तुम्हारे लिए करम डौड़ा खरीदेंगे, तुम्हारे कपड़ा खरीदेंगे ।

इस तरह विभिन्न समय का विभिन्न राग में करम गीत का बछौर रात भर चलते रहता है। कभी पहिल संझा, कभी आधा रतिया, कभी भिन्सरिया, कभी झाइल धुका, कभी करम थपड़ी, कभी करम भरनी गीत का राग लगातार चलते रहता है। करम थपड़ी में ही अलग-अलग चार-पाँच तरह राग का गीत है। करम कटने जाने, लाने और करम को घुमाने विसर्जन करने ले जाने का राग अलग है इसी राग में राज करम के लिए करम डौड़ा और कपड़ा बनाने के लिए गीत के द्वारा तुरी और चींक बड़ाइक को अगाह किया जा रहा है। गीत इस प्रकार है -

तुरीन गे संवारो भला
रिंगी-चिंगी डलिया बनाय,
देबे गे संवारो भला,
बना-चुना डलिया,
बनाय देबे गे संवारो भला .... ।।1।।

करम का दिन लागिन
रिंगी-चिंगी डलिया बनाय
देबे गे संवारो भला
बना-चुना डलिया बनाय
देबे गे संवारो भला ..... ।।2।।

चींकीन गे संवारो भला,
रंगा मला गमेछा बनाय,
देबे गे संवारो भला,

रंगा मला गमेछा में,
रिंगी-चिंगी फुदेना बनाय,
देबे गे संवारो भला ..... ॥1॥
करम का दिन लागिन,
रंगा मला गमेछा बनाय,
देबे गे संवारो भला,
रंगा मला गामेछा में,
रिंगी-चिंगी फुदेना बनाय
देबे गे संवारो भला .... ॥2॥

मान्दर बजता है -

शुरू - थींग दंग दथुंग दंग .....
दतंग थींग तांयक तांयक .....
घुराना - थींगदा तंग दतंग थींग तांयक तांयक .....
दथुंग दंग दथुंग दंग
दतंग थींग तांयक तांयक .....

करम संझोत के अवसर पर कदलेटा पूजा :

इस तरह तैयारी करते करते आखिर करम संझोत भी पहुँचा ही गया । करम के एक दिन पहले, कहीं-कहीं पर कुछ दिन पहले गाँव के पाहन पुजार एवं गाँव के सारे लोग ''कदलेटा'' पूजा करते हैं। कदलेटा पूजा में डंडा कट्टा/भख कट्टी करते हैं । उसे ही भेलवा फाड़ी भी कहते हैं । क्योंकि इसमें भी भेलवा का डाल अवश्य रूप से व्यवहार किया जाता है, यह एक ऐसा असाधारण फल है जिसका फल उपर और उसी में बीज अलग से नीचे रहता है । भेलवा को रोग-पाप और विघ्न-बाधा नाशक माना गया है। इसके बाद प्रत्येक किसान अपने अपने खेतों में, बारी-बगान में, गोबर गड़हा में एक एक भेलवा की डाली अथवा तेला की डाली अथवा सिन्दुवार की डाली गड़ता है। इसे ''ईन्द गाड़ना'' भी कहते हैं। वर्षा के लिए इन्द्र देवता की पूजा होती है। यह ईन्द खेती की रक्षा करने में मदद करता है। यह वैज्ञानिक दृष्टिकोण से भी उत्तम है। क्योंकि पक्षियों द्वारा फंसल को बर्बाद करने वाले कीड़े मकोड़े का सफाया किया जाता है। एक ईन्द डाली से दूसरे खेत की ईन्द डाली में बैठकर कीड़ा-मकोड़ा को देखते रहता है।

ऐसा ही समय में चौरा धान फुटता और बाल लगता है, जिसे कीड़े मकोड़े से सुरक्षा अत्यन्त आवश्यक है।

कदलेटा पूजा करने के संबंध में संभवतः ऐसा विश्वास किया जाता है कि इतना दिन हमलोग कादो खेत में कादो लेटा-लेटा कर अपना खेती किये । अब सभी खेतों में फसल लगकर हरियाली छा गयी । अब हमें अच्छी फसल पाने के लिए धर्मेस से दया के लिए प्रार्थना करने का समय है । इतने दिनों तक तो हम कठिन परिश्रम से भूखे-प्यासे कादो-कीचड़ में लेटा-लेटा कर खेती किया अब धर्मेस आपका बारी है। हमें अच्छी फसल उपलब्ध कराने में मदद करेंगे । हमारी खेती के पौधों में किसी प्रकार का रोग-बलाय न हो ऐसा ही कह कर पूजा करते हैं ।

करम उपवास :-

करम संझोत के दिन से ही सभी करमाइत उपवास करते हैं सभी नदी-नाला तरफ नहाने-धोने जाते हैं नहा धोकर मैना के जैसा चोर-बोर होकर आते हें । सभी के मन में उल्लास और उमंग छलछला कर भरा रहता है। खुशी का इजहार हर बात, हर गीत में दिखाई देता है। दो पहर के बाद जैसे-जैसे शाम ढलने लगता है, वैसे-वैसे सभी और आनन्द विभोर होने लगते हैं, ऐसा लगता है कि उनके लिए फिर से नया सूरज उग रहा है।

करम डाली काटने की विधि :

शाम को चार-पाँच बजते-बजते लड़कों का एक टोला अपने मांदर के ताल के साथ अखड़ा में निकल पड़ते हैं । मांदर का आवाज सुन कर सभी लड़के-लड़कियाँ, बच्चे नये नये रंग-बिरंगे कपड़े पहन कर अखड़ा में इक्ट्ठा होते हैं। मांदर का ताल और किशोरियों की गीतों का मधुर राग से सभी झूम उठते हैं और सारा वातावरण मधुरमय हो जाता है। उधर उपवास किये हुए पाहन, महतो और महादेव पारवती लोग भी निकलते हैं और आराध्य देव-वृक्ष करम को जंगल से, टांड़ से, चौरा से, नदी किनारे से काट कर लाने के लिए तैयार हो कर गाजा बाजा के साथ चलते हैं । करम टाड़ कहीं नजदीक भी हो सकता है और कहीं दूर भी अगर कहीं एक ही काम का पेड़ है और उसे तीन चार गाँवों के पाहन को उसे काटना है, तो पहले उस गाँव का पाहन, जिसका सीमा सरहद में पेड़ है काट लेगा, तब दूसरे गाँव के पाहन उसको काट सकता है। प्रायः सभी साल एक ही करम पेड़ की डाली को काटा जाता है। कहीं कहीं पर उस दिन सवेरे से ही करम पेड़ के पास बैठकर एक आदमी पहरा देता है ताकि उस दिन उस करम डाल का पत्ता में कोई चिड़या वगैरह पैखाना न करे ।

तीन करम डाल को काटना :-

जब सभी दल बल के साथ करम पेड़ के पास पहुँचते हैं, तब

पाहन या अधिकृत व्यक्ति सबसे पहले करम पेड़ पर पानी उढ़ेल कर उसे धो कर पवित्र करता है। उसके बाद उस पर अरवा सूता का तीन फेर लपेटकर कपड़ा पहनाता है, टीका सिन्दुर देता है, अरवा चावल छींट कर सुमरता है, धूप अगरबत्ती जलाता है और श्रद्धा के साथ प्रार्थना करता है कि हे आराध्य देव-वृक्ष करम देवता हर साल की भांति इस साल भी हम गाँव भाइया मिल-जुलकर बड़ा रीझ-रंग और खुशी से आपको लेने आये हैं । आप ही हम लोगों का माँय-बाप है, मालिक हैं, हमें छाँह-छत्तर कर रखना, बाल-बच्चे उपासल पियासल है। किसी को किसी प्रकार का धक्का-पेला नहीं होना चाहिए। किसी को किसी प्रकार का रोग-व्याध नहीं होना चाहिए। पानी से, बरखा से, अन्न से, धन से, सांस से, बरकत से, लक्खी से लक्ष्मी से, विद्या से, बुद्धि से भरपूर रखना चाहिए । हम अन्धा मनवा थोड़ा बिनती अधिक समझना चाहिए कह कर करम पेड़ को दण्डवत प्रणाम कर पेड़ के ऊपर चढ़ता है और चुना हुआ तीन डाली को तीन-तीन छेंव में काटते हैं। काटने के पहले ये देखना पड़ता है कि डाल का फुँनगी या पत्ता किसी प्रकार का काँटा-छाँटा हुआ नहीं होना चाहिए । जितने भी उपवास किये हुए महादेव-पारवती नीचे रहते हैं, उसे झोकते हैं । करम डाल को जमीन से छूने नहीं दिया जाता है। जमीन से छूने पर उसे अपवित्र माना जाता है।

इस प्रकार तीन करम डाल को काट कर तीन उपासल कुंवारी लड़कियाँ उसे पकड़ती हैं। कहीं कहीं पाहन ही उसे काटकर लाता है। करम डाल को पकड़वाने के बाद अब गाँव की ओर चलने की तैयारी होती है। वहाँ से चलने के पहले तीन फेर करम डाल को नचाते हुए चक्कर लगाते हैं। उस समय इस प्रकार का गीत गाया जाता है -

इतई दिने करम,
डाड़े रहले करम,
डाड़े रहले ...... ॥1॥

आजु तो करम,
डीहे आले करम,
अखेड़ा में आले-भाल भले भले ..... ॥2॥

मान्दर का ताल पहले दिया हुआ है ।

इस तरह करम राजा रास्ते में बीच-बीच में तीन चक्कर घुमाते हैं। इसी बीच कुछ फूल तोरने गयी लड़की भी अपने फूलों की टोकरी के साथ सम्मिलित होती है । इस समय कुडुख में इस प्रकार गीत गाते हैं –

पूंप तोक्खा के-रन दिया,
झरिया झरिया के-रन रे ..... ॥1॥

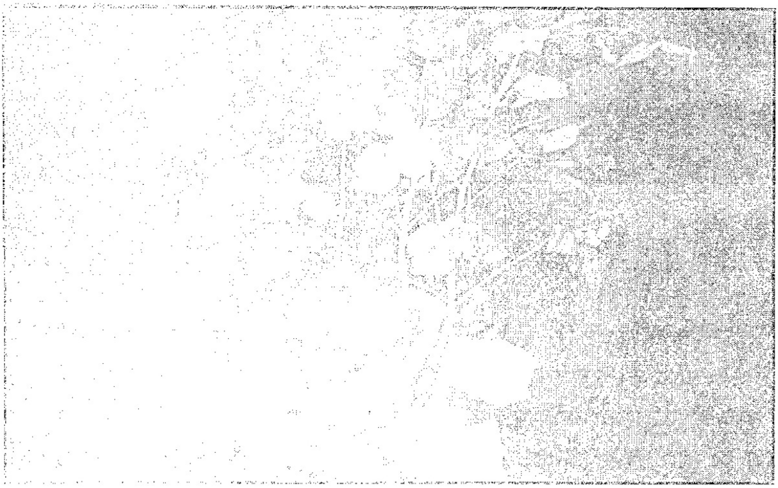

फूल कोंड़ा मोखोर-अन,
अम्म ओनकन मोखोर-अन,
झरिया झरिया कोर-अन रे .... ॥2॥

अर्थ :-

फूल तोड़ने झरिया झरिया गयी । भूख-पियास सभी को भूल कर करम राजा के लिए झरिया झरिया फूल तोड़ने गयी ।

इस तरह बड़ा ही जोश से और उमंग और उल्लास के साथ हम गाँव तक पहुँचाते हैं । गाँव पहुँचते ही लोगों को मालूम हो जाता है कि करम राजा गाँव पहुँच रहा है, इसलिए लोग अपना-अपना घर का दरवाजा को बन्द कर देते हैं और बाल-बच्चों को भी करम के आगे शुरू में आने नहीं देते हैं । उनका ऐसा विश्वास क्यों है कि करम के आगे-आगे भूत-देव व चौकान आते हैं और जो शुरू में भेंट होते हैं उसे पेट वगैरह दर्द करता है, इत्यादि ।

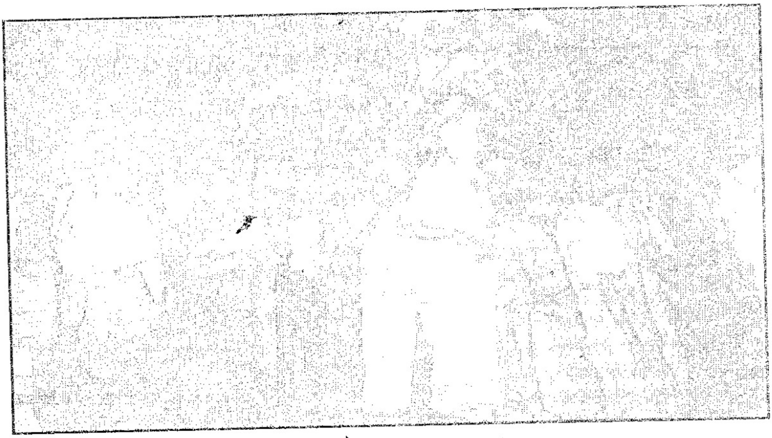

जब बड़ी धमू-धामू और सज-धज कर करम राजा अखड़ा में पहुँचता है तो उसे भी अखड़ा में तीन बार नाचते-गाते हुए घुमाया जाता है। आजकल विशेष कर शहरों में या उसके अगल-बगल के गाँवों में अखड़ा को बिजली-बत्ती से, कागज का विभिन्न रंगों के फूल से सजाकर जगमगा दिया जाता है। उसके बाद जो भी करम डाल को पकड़े रहते हैं अखड़ा के बीच में पूरब की ओर मुँह कर खड़े रहते हैं । जब तक पाहन लोटा में पानी, गोबर और फल (लोहे का नुकीला औजार) लेकर अखड़ा में नहीं आता है। इस दरमियान भी गाना बजाना चलते रहता है। उपर्युक्त सारी सामग्री के साथ पाहन अखड़ा में आता है, सबसे पहले धरती को गोबर से लीपकर पवित्र करता है, उसके बाद वहीं पर फल से गड़हा खोदता है और तीनों करम डाल को एक साथ गड़हा में डाल देता है। उसके साथ चीरो (एक प्रकार का घास) सबय (यह भी घास) तथा करम कटा हुआ बलुआ को भी साथ ही गाड़ देता है । उसके बाद करम में पानी ढालते हुए प्रार्थना करता है, तेल, सिन्दुर देता है । ठेहुना कर तीन बार प्रणाम करता है। इधर नाचने गाने वाले अपने सूर-ताल में नाचते-गाते रहते हैं । करम को गाड़ने के बाद वहाँ पर दीप जलाते हैं । धूप-धुवन देते हैं और फूलों का गद्दा बिछाते हैं ।

इसी कार्यक्रम को देखकर ही किसी ने एक गीत गाया है -

करम का बुदा तरे,
का झिली मिली आयो,
का झाका माका ..... ।।1।।
छोड़ा छोड़ी दिया बरय,

से झिली मिली आयो,
से झाका माका ..... ।।2।।

उसके बाद गाँव का भंडारी वहाँ पर आता है और गाड़ा हुआ करम राजा को पहरा करता है। सभी लोग घर घुस जाते हैं । खा-पीकर एक बार घर-घर उधमैध विभिन्न प्रकार के रागों में गीतों का दौर चलता है। करम का दिन है सबका घर में महिमान आये हैं और खूब झाइल मान्दर बज रहा है वहीं कोई ऐसा भी घर होगा जहाँ ऐसा वातावरण न हो । शायद ऐसा ही एक घर होगा जिसमें दो ही एक भाई और एक बहन है, जो अपनी व्यथा गीत के रूप में उगार किया गया है - झाइल धुका राग में -

सोबकरा घरे झाइल मान्दर बाजे,
मोरा घर रायसुना भेल रे ..... ।।1।।
जा तोरे छोटे भइया झाइल मान्दर लानबे,
दुइयो रे भइया बहीन खेलब रे ...... ।।2।।
मान्देरा जो बाजे एड़ी घुमाइर रे,
बसिया बजलैं आधो राती रे .... ।।3।।
मान्देरा का सबादे निंदा नहीं आवय,
सुतला संवारों जगी गेला रे,
जगल संवारों खेले जाय .... ।।4।।

जब समय अधिक होने लगता है तो भंडारी या कोटवार पूरे गाँव में हँकवा करता है और एलान करता है कि चलिए हो गाँव के गाँवा भाइया, उपासल पियासल महादेव-पारवती करम कहानी सुनने के लिए । इसके बाद सभी अपने अपने महादेव पारवतियों जो उपवास किये हैं को करम कहानी सुनने के लिए अखड़ा में ले जाने की तैयारी करने लगते हैं। करम डौड़ा में अरवा चावल, चूड़ा, सिन्दुर, अगरबत्ती, खीरा बेटा, जवा फूल, अन्य फूल, हल्दी रंगा हुआ कपड़ा, फल, दूध और अक्षत इत्यादि डाल कर उसके अन्दर

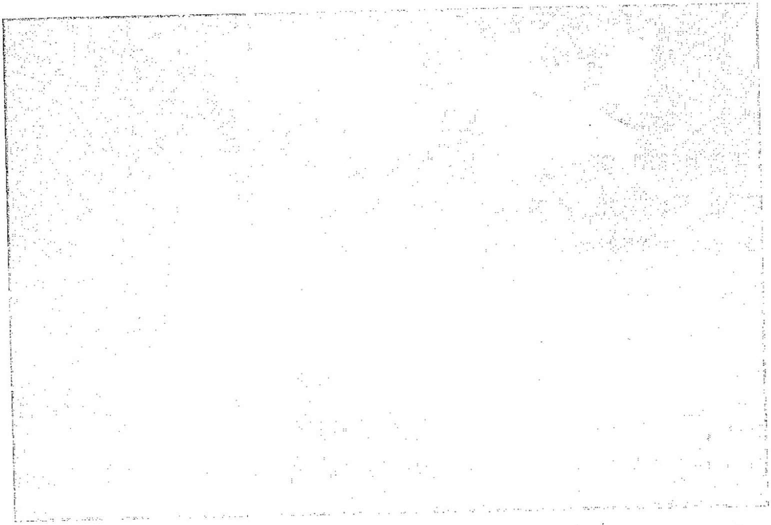

दीप जलाकर [illegible] किया हुआ [illegible] घुमाकर घुमाते हैं [illegible] थोड़ा गिराते हुए [illegible] करम राजा [illegible] [illegible] हूँ [illegible] जाता है कि [illegible] में ही थी गेहूँ इत्यादि [illegible] थे और धूप और [illegible] सीधे [illegible] और वह भी बिल्कुल पीला हो गया था। इसी से करम देवता ने [illegible]। इसी लिए करम में जवा फूल का होना जरूरी है। जब टोकरी या [illegible] जहाँ पूजा का सामान था उसमें दिया [illegible] जलाया गया। [illegible] अभी भी [illegible] जाता है। इसका दो कारण हो सकता है एक तो अगर दीपक का प्रकाश बाहर दिखाई दे तो दुश्मन कहीं से भी देख सकते हैं। दूसरी कि हवा लगने से दीपक बुझ जा सकता है। टोकरी या पूजा सामान को ढकने के लिए साल पत्ता से बड़ा दूसरा पत्ता बहुत कम उपलब्ध होता है। निश्चित रूप से सभी के जंगल में बड़ा-बड़ा जंगली साल का पत्ता दिखाई देता है इसलिए जिसे जो पाये उसी से काम चलाये।

जवा फूल के संबंध में यह भी कहा जाता है कि दो ही पती निकलता है इसलिए उसी का नाम जाने से जुड़वा-बच्चा होता है उसे उसी अनुरूप नाम रखते हैं जैसे लड़का हो तो राम और लक्ष्मन अगर लड़की हो तो गंगी और जमुनी इत्यादि ।

करम [illegible] पूजा :

करम की पूजा पाहन और करम कहानी गाँव का पाहन या कोई भी अधिकृत [illegible] किया जाता है। बहुत जगह गाँवों में करम कहानी सुनाने के लिए किसी खास व्यक्ति को अधिकृत किया जाता है। इसे ऐसा [illegible] गाँव में एक भागीदारी सौंपी गयी है,

जो सदान और आदिवासी के बीच एकता का एक कड़ी का परिचायक है। पाहन सबसे पहले सभी उपवासियों को करम डाल को धोने के लिए कहता है। सभी अपने-अपने पानी से उसे धो डालते हैं, फिर धूप-धुवन अगरबत्ती जलाने को कहता है। सभी धूप-धुवन, अगरबत्ती जलाते हैं उसके बाद में करम डाल में [illegible] और [illegible] में हल्दी रंगा हुआ कपड़ा बाँध कर कपड़ा पहनाते हैं। फिर अक्षत, सिन्दूर देने के लिए कहता है। अन्त में जवा फूल, खीरा बेल, फल-फूल को करम में चढ़ाने के लिए कहता है, दूध ढलवाता है। उसके बाद करम डाल को कुंवारी की उपवासियों को पकड़वाकर हिल्ला-डिल्ला कर पूछवाता है कि क्या पाने के लिए उपवास रहती? वह कहती है खीरा जैसा बेटा [illegible] और [illegible] इत्यादि । फिर कहवाता है कि

केकर करम, वे कहतीं है अपन करम, फिर वह कहता है केकर धरम, वे कहतीं हैं भाइयक धरम इत्यादि । उसके बाद सभों को अपने अपने मनोकामनाओं की पूर्ति के लिए करम राजा से प्रार्थना करने को कहता है। कुंवारी लड़कियाँ एक अच्छा पति पाने की इच्छा के लिए वर मांगती है, एक अच्छी माता बनने का कामना करती है, एक कोहड़ा जैसा बेटा पाने का भी शुभ कामना करती है। प्रार्थना के बाद सभी दण्डवत प्रणाम करती है। करम कहानी सुनाने के पहले मुर्गी (रंगवा) बली दी जाती है, उसके बाद करम कहानी का आरंभ होता है ।

जब अखड़ा में करम का पूजा आराधना समाप्त हो जाता है और करम कहानी सुनने के लिए बेसब्री से लोग इन्तजार करते हैं, इसी बीच एक उपासल युवती का भूख से अपने को संभाल नहीं सकने के कारण एक करम कुड़ुख गीत में अपना दुःख भरी उद्‌गार व्यक्त करती है -

बिड़ीम पुत्ता करम उबसियन,
ची आयो, पापा ...... ।।1।।

कलय बेटी, बरय बेटी,
खीरी मेनर बरय बेटी ..... ।।2।।

ओंदय बेटी बरय बेटी,
गोर-गोरन मोखय बेटी,
बारिका-बारिकन मोखय बेटी ...... ।।3।।

गोर-गोरन मला मोखोन आयो
बारिका-बारिकन मोखोन आयो ..... ॥4॥

अर्थ :-

उपासल लड़की कहती है कि मैं दिन भर करम उपवास की माँ मुझे रोटी दो । माँ कहती है जाओ बेटी करम कहानी सुनकर आना उसके बाद मैं तुमको रोटी दूँगी। उसके बाद कहती है, लो बेटी आओ बेटी गोर गोरा (छिलका) रोटी खाओ । लड़की कहती है माँ मैं गोर-गोरा रोटी को नहीं खाऊँगी मैं तेल से छना हुआ रोटी को खाऊँगी । मैं पुवा रोटी को खाऊँगा ।

इसी प्रकार एक युवती करम कहानी सुनने के लिए सज-धज कर सिर में बकुला पंख का टैंया लिए अखड़ा में जाती है, उसी दरमियान उसके सिर से किसी ने उसका टैंया को ले लिया उसे वह गीत के रूप में कहती है। कुड़ुख झाइल धुका राग में -

कहनी/खीरी मेना के-रन यो,
टैंया एंगहय चोरी मंजा रे ..... 2 ॥1॥

दूसरी पेठन बरा ची तो मइगो
निग्गा गे राम टैंया खेंदोन रे ..... ॥2॥

अर्थ :

मैं कहानी सुनने गयी माँ, किसी ने मेरी टैंया को ले लिया । माँ उसे सान्तवना देती हुए कहती है रहो बेटी दूसरी बाजार को पहुँचने दो. तुम्हारे लिए मैं उससे भी सुन्दर राम टैंया खरीद दूँगा ।

करम कहानी :-

करम कहानी सुनने के पहले एक मुर्गी की बली दी जाती है। करम कहानी, कहानीकार के क्षमता के ऊपर बहुत हद तक निर्भर करता है। वह उसे बहुत लम्बा भी कह सकता है और संक्षेप में भी । यहाँ पर करम कहानी सरना नव युवक संघ केन्द्रीय कार्यालय, राँची द्वारा प्रत्येक वर्ष करम और सरहुल पूर्व संध्या के शुभ अवसर पर प्रकाशित "सरना फूल पत्रिका" में डा. बहुरा एक्का द्वारा लिखित कहानी का आधार लिया गया है। करम कहानी सुनने के पहले उपासल लोग कुछ चावल और फूल वहाँ पर उपस्थित जन समूह के बीच में बाँटते हैं, जिसे कहानी के दरमियान बीच-बीच में तीन बार करम राजा के ऊपर बारिसो-बारिसो-बारिसो कह कर छींटा जाता है । इसको ऐसा करने का अर्थ यह है कि पहले के जैसा पुनः अन्न-धन भरपुर हो, पानी बरखा अच्छा से हो, राज में सभी खुशहाल हों, सुख-शान्ति बहाल रहे करम राजा सबको आर्शिवाद दीजिए फिर से नया खुशी आय इसी को कहते हैं कि अब राज बहुर गया है और इसीलिए करम

के बाद आदिवासी समाज में नया शादी-विवाह का नेग-दस्तूर भी शुरू कर दिया जाता है इसी संदर्भ में एक गीत करम झूमर झूमका गाया जाता है –

करम का दिने आले रे सोमिया,
बैठले करम दुआर रे ...... ॥1॥

रे सेंगे आसो आलवा अमाला
जोड़ी भइया दुआरे बैठय हो ..... ॥2॥

न लेबो अन्ना-धन्ना, न लेबो सोना-रूपा
हमें लेबो कनियाँ कुँवार हो ..... ॥3॥

करम कहानी के संबंध में कहा जाता है कि सतयुग में एक राज्य में एक राजा और रानी रहा करते थे । राजा का नाम मनका और रानी का

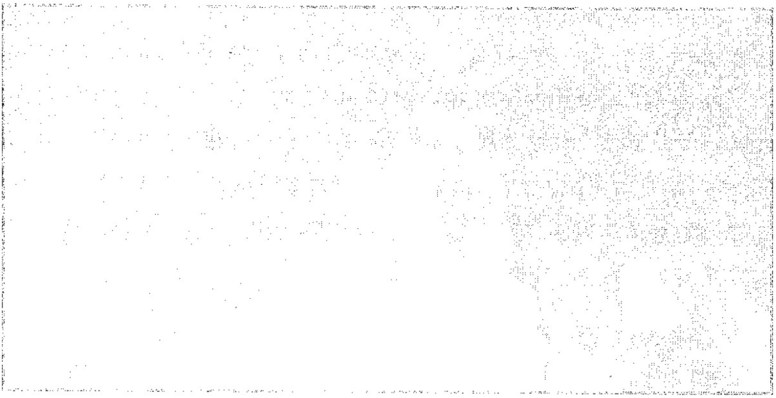

नाम [illegible] था । राजा और रानी का विवाह हुए बहुत दिन हो गया था पर भी उन लोगों का बाल-बच्चा नहीं था । इसलिए राजा और रानी बहुत उदास मन से रहते थे । रानी कभी-कभी अपने मन की बात भगवान से प्रार्थना करती थी । कभी कभी दोनों आपस में बैठकर विचार करते थे और कहते थे कि हे भगवान हमलोगों को ऐसा क्यों किया ? ऐसी स्थिति में उदास होना स्वाभाविक था । कभी-कभी राजा मनका अपने मन की व्यथा को भुलाने के लिए अपने खेत खलिहान तरफ जाता था एवं खेतों की हरियाली को देख कर उसका दुःखी मन भी हरा-भरा हो जाता था । जब खेत खलिहान तरफ से हरा भरा मन को साथ कर आता था पर फिर घर में

कोई बाल-बच्चा नहीं फिर उसका मन उदास हो जाता था । ऐसा ही सोचते-सोचते कभी देर रात तक नींद नहीं आती थी ।

एक दिन राजा ननका को देर रात तक नींद नहीं आयी अन्त में सो गये उन्हें रात में एक सपना मिला । सपना में कहा गया कि आप लोग तीज के दूसरे दिन सात किस्म का अनाज का जावा उठाये और उसका विधिवत सेवा कीजिए उसके बाद भादो शुक्ल पक्ष एकादशी को उपवास कर तीन करम डाल जिसका पत्ता चाँद के समान गोल है के मिलजुलकर काट के लाइये एवं अखड़ा में गाड़ कर नेग-दस्तूर एवं विधि-विधान के साथ उसका सेवा पूजा श्रद्धा और भक्ति के साथ कीजिए। ऐसा करने से आपलोगों का सभी दुःख तकलीफ दूर हो जायेगा और सभी मनोकामनाओं की पूर्ति होगी।

ऐसा रात को देखा सपना को सबेरे राजा ननका ने रानी ननकी को भी बतलायी ऐसा सपना का समाचार सुन कर रानी ननकी बहुत खुश हुई और कहने लगी कि यह तो बहुत अच्छा सपना है हमलोगों को निश्चित रूप से ऐसा करना ही चाहिए, कहकर बताये हुए सपने के अनुसार तैयारी में लग गये । जब भादो शुक्ल पक्ष एकादशी का दिन आया तो जैसा सपना में आदेश था वैसा ही बड़ा विधि-विधान के साथ तीन पवित्र करम डाल को काट कर रींझरंग से लाया और अखड़ा में गाड़ कर विधि-विधान एवं श्रद्धा और भक्ति के साथ पूजा अर्चना किया ।

इसके कुछ महिनों के बाद रानी ननकी की कोख में बाल-बच्चा होने का कुछ असरा दिखा । इसे रानी ननकी बहुत खुश हुई। अन्ततः रानी ननकी की कोख से दो जुड़वा लड़का बच्चा का जन्म हुआ । राजा और रानी का खुशी का ठिकाना नहीं रहा । उनलोगों को विश्वास हुआ कि ये सब करम देवता की पूजा का ही प्रतिफल है इसलिए बड़ा लड़का का नाम करमा और छोटा लड़का का नाम धरमा रखा गया । उसके बाद उनलोगों से फिर सात बाल-बच्चे हुए । इसीलिए करम गीत में सात भाई एवं सात गोतनी का जिक्र गीत में मिलता है, जिसे आगे दर्शाया गया है।

इस प्रकार करम कहानी में अधिकतर दो भाइयों का ज़िक्र किया जाता है, उसे ही करमा और धरमा कहा जाता है। कहीं-कहीं सात भाइयों का भी जिक्र करम गाना से मिलता है जैसा गीत में सात भाइयों का ज़िक्र

किया गया है जरूर ही सात भाई थे । लेकिन जीवन का घटना क्रम दो भाइयों करमा और धरमा पर ही अधिक अंश में घटित हुआ । एक धरमा अच्छा करम किया दूसरा करमा कुछ बुरा करम किया तो अच्छा करम का फल अच्छा और बुरा करम करने का फल बुरा हुआ । इसलिए करमा और धरमा दो ही भाइयों की कहानी अधिकतर प्रचलित हुआ । लेकिन करमा और धरमा का ही कहानी कहा जाता है। करमा को बड़ा भाई और धरमा को छोटा भाई के रूप में जाना जाता है। कहीं-कहीं दोनों भाइयों को परदेश जाने की बात कही जाती है, कहीं कहीं केवल करमा को भर परदेश जाने की बात कही जाती है।

सात भाई के संबंध में गाना इस प्रकार है -

सातो भाइया रे सातो करम गाड़य,
सातो गोतनी सेवा करय हो ..... ।।1।।

के भाइया उपासल, के भइया पियासल,
चाला जाऊ करम का सेवा हो ..... ।।2।।

बहिन मोरा उपासल, भाइया मोरा पियासल,
चाला जाऊ करम का सेवा हो ...... ।।3।।

लोटा में पानी डालिया में चिंउरा,
चाला जाऊ करम का सेवा हो ...... ।।4।।

सिकी सारी धान केरा, चिंउरा कुटावय,
गाय रे सुरही केरा दूध हो .... ।।5।।

चीची-चीची खिरावा, मुठा भरी चिंउरा,
सारू पतई डाबेना डाबय हो ..... ।।6।।

खंड़ा-खंड़ा खिरवा मुठा भरी चिंउरा,
घरा घरा बैना भुलावय हो ...... ।।7।।

के खलौ खिरावा, के खलौ चिंऊरा,
धरा-धरा बैना भुलावय हो ..... ।।8।।

आजा खलौ खिरावा, आजी खलौ चिंऊरा,
भरा-धरा बैना भुलावय हो ..... ॥9॥

करम कहानी में कहा जाता है कि करमा और धरमा दो भाई थे। एक बार राज्य में भयंकर अकाल पड़ा तब करमा और धरमा अपने रोजी-रोटी की खोज में परदेश जाने का निश्चय किये। दोनों भाइ परदेश चले गये । उन लोगों को समान उतारने और चढ़ाने का काम मिला । उसे मलगा लदना कहते हैं चूंकि वे बहुत परिश्रमी थे, इसलिए थोड़े ही दिनों में दोनों ने बेसुमार धन कमाये । कुछ दिनों के बाद उन्हें अपने घर-परिवारों की याद सताने लगी। इसलिए अब वे अपने देश लौटने का मन बना लिये और वहाँ से निकल पड़े। रास्ता लम्बा और कठिन तो था ही साथ-साथ कमाया हुआ धन का बोझ भी था । रास्ता में चलते-चलते थक कर चूर-चूर हो गये। इसलिए रास्ते में ही कहीं-कहीं पड़ाव कर काली रात भी काटनी पड़ी। दूसरे दिन जब सुबह हुआ तो वे दिशा-मैदान के लिए इधर-उधर हुए। उसी समय धरमा को अनुपस्थित पाकर करमा उसका नजायज फायदा उठाया । कहते हैं कि छोटा भाई धरमा का थैला से कुछ धन चुरा कर अपना थैला में डालकर धरमा के साथ धोखा का काम किया । धरमा चूंकि धार्मिक विचार का व्यक्ति था, इसलिए अपने बड़ा भाई करमा पर तनिक भी संदेह नहीं करता था। वह अपवित्र काम उसी आराध्य देव-वृक्ष करम के नीचे किया । इस तरह अब और चलते-चलते वे अपने गाँव के बिल्कुल नजदीक पहुँच गये, लेकिन इतना थक गये थे कि और आगे एक कदम भी बढ़ना मुश्किल हो गया। अन्ततः गाँव के सीमान में ही फिर से डेरा डालना पड़ा।

वहीं से अनेकों व्यक्तियों को कहला भेजवाया कि हमलोग गाँव सीमान के अन्दर पहुँच चुके हैं, घर वाले हमलोगों को परीछ कर ले जाने के लिए जल्दी आवें । उसी दिन भादो का एकादशी दिन था और गाँव का अखड़ा में करम गाड़कर करम का सेवा और पूजा में सभी लोग लीन थे। करम गीत, नाच और मांदर का ताल से अखड़ा गूंज रहा था इतना सुन्दर प्रकृति की छटा में रीझ-रंग के सुहावना अवसर पर भला किसको किसका परवाह है। कितनों को कहलवाकर भेजने के बावजूद भी जब उनलोगों को कोई लेने नहीं आया तो करमा का खीस उसका माथा में चढ़ गया और अपना छोटा भाई धरमा को ही बुलाने के लिए भेजा। जब धरमा गाँव गया

तो वहाँ का करम का वातावरण देखकर वह भी अपना कर्म को भूल गया। इस तरह से जाने-अनजाने करमा का बहुत बड़ा बेइज्जती हुआ । इधर रात भी बहुत हो चुका था । करमा इतना बड़ा अपमान को सह न सका और अपने ही खुद गाँव गया तो देखता है कि सभी धरमा सहित अखड़ा में करम का सेवा-पूजा करने में लीन है। करमा इस बात से बड़ा दुखित हुआ और क्रोधित होकर बोला - तुमलोग कौन करमा का सेवा-पूजा कर रहे हो? असली करमा तो यहाँ मैं हूँ, कह कर अखड़ा में गड़ा हुआ करम डाल को गुस्सा से उखाड़ कर पैरों से रौंद डालता है और उसे मन्दुर गड़हा में बड़ी ही निर्दयता पूर्वक फेंक डालता है। जो नदी के पानी के साथ बहकर सात समुद्र पार चला गया । उसके बाद अपना बाल-बच्चों को भी मार-पीट करने लगता है।

इतना होना था कि उसी दिन से करमा के उपर करम का कोप शुरू हो गया । करमा के ऊपर विभिन्न प्रकार का दुःख-तकलीफ और झंझट का पहाड़ टूटने लगा । अन्न-धन, लोग-लक्ष्मी और सभी सुख शान्ति धीरे-धीरे कुछ ही दिनों में ही बिल्कुल समाप्त हो गया और बाल-बच्चे खाने के लिए दाने-दाने के लाले पड़ गये । बेसुमार कमाया हुआ धन क्षणिक समय में ही बिल्कुल समाप्त हो गया ।

करमा की पत्नी को दूसरों के खेत में काम करने के लिए मजबूर होना पड़ा। कहा जाता है कि एक दिन धरमा का रोपा रोपने के लिए मदाईत किया गया और मदाइत में सबको खाना खिलाना पड़ता है। जैसे दूसरों को मदइत के लिए कहा गया, वैसा ही करमा को भी कहा गया, लेकिन करमा रोपा खेत नहीं गया । केवल उसका पत्नी रोपा रोपने गयी । धरमा सबको खाने-पीने के लिए इज्जत के साथ निमंत्रण दिया, कहीं-कहीं पर करमा को खाने के लिए निमंत्रण नहीं मिला की बात कही जाती है लेकिन करमा उसमे शामिल नहीं हुआ और अपना पत्नी को भी शामिल होने नहीं दिया। लेकिन उस दिन की परिस्थिति इतनी नाजुक थी, उसके बाल-बच्चे भूख से तड़पने तथा रोने कल्पने लगे। करमा की पत्नी को यह दुःख सहा नहीं गया कटोरी लेकर धरमा के घर मांड़ मांगने गयी। धरमा की पत्नी मांड़ को कटोरी पर डाल रही थी कि दुर्भाग्यवस वह मांड़ जमीन पर गिर गया । इन सबको सुनकर करमा के मन में भीतर ही भीतर क्रोध का सीमा और ऊपर

बढ़ने लगा ।

ठीक उसी रात गुस्साया हुआ करमा धरमा का रोपा खेत में गया तथा ताक पाकर सभी रोपा को उखाड़-उखाड़ कर फेंकने लगा । लेकिन दैवी शक्ति के कारण सभी उखाड़ कर फेंका हुआ रोपा पीछे उलट कर देखने से पता चला कि वह जस का तस है। उसी समय उसे एक आवाज सुनाई पड़ती है, कहा जाता है कि करमा तुम्हारा मन के भीतर पाप का डेरा हो गया है। तुम अपना भाई का धन चुराया । सभों के सामने अखड़ा में गाड़ा हुआ करम राजा का अपमान किया । सुनो जब तक तुम करम राजा के पास जा कर उससे क्षमा नहीं मांगोगे तब तक तुम्हारा खराब दिन कभी नहीं सुधरेगा सो जाओ करम राजा को भादो एकादशी के दिन प्यार से लाकर अखड़ा में गाड़ो विधि-विधान के साथ पूजा-पाठ करो, तभी तुम्हारा बिगड़ा भाग्य उबरेगा ।

ऐसी दिव्य वाणी को सुन कर करमा का हृदय में दया और प्रेम का धार उमड़ पड़ा । बुरा से अच्छा काम करने की ओर उसका हृदय ढालने लगा । उसका मन में नेक-धरम का भाव जागने लगा । उसका अन्धकार मय मन में प्रकाश का किरण दिखाई देने लगा। उसका हृदय बिल्कुल परिवर्तन हो गया और सोचने लगा कि पाप और बुराई का रास्ता में चलकर जीता नहीं जा सकता है। अपना किया हुआ पाप पर पछताने लगा । इस तरह करमा के मन में ज्ञान का दरवाजा खुल गया ।

अब करमा दिव्य शक्ति का दिया हुआ आदेश के अनुसार भादो एकादशी के दिन करम राजा को अखड़ा में गाड़ने के लिए खोजने निकल पड़ा । रास्ता बड़ा कठिन और दुर्गम था, लेकिन करमा अपना आत्म विश्वास के साथ दृढ़ संकल्प कर सभी प्रकार के विघ्न-बाधाओं का सामना करते हुए करम का खोज में चलने लगा । कहा जाता है कि चलते-चलते वह बहुत थक जाता है और बहुत जोरो से प्यास लगती है । एक तलाब के पास पानी पीने जाता है और अपना अंजुरा में पानी लेकर पीने के लिए उपर उठाता है तो देखता है कि पानी में बहुत सारे कीड़े भरे पड़े हैं सो वह पानी नहीं पी सका । वह उदास मन लिए आगे बढ़ने लगा । तलाव का मालिक उसे पूछा राहगीर तुम कौन हो और कहाँ जा रहे हो ? करमा अपना

आपबीती बात बतलाया । उसी समय तालाब का मालिक भी करमा से अनुरोध किया कि मेरा तकलीफ का उपाय याने तलाव का पानी में कीड़ा लगने का कारण और उसका निदान भी करम देवता से पूछ कर आना और लौटते बार हमे बतलाते जाना ।

उसके बाद करमा आगे बढ़ना लगा । करमा को खूब जोरों से भूख सताने लगी । आगे जाते-जाते करमा देखा रास्ता के किनारे आम का एक बगीचा है और सारे पक्के आम पेड़ में लटके हुए हैं। कुछ-कुछ आम बारह मसिया होते हैं जो सावन-भादो में भी पकते हैं कहीं-कहीं आम के जगह गुलर का जिक्र किया जाता है । करमा बगीचा के समीप जाता है और पक्का आम को खाने के लिए तोड़ता है और खाने के लिए ज्योंही मुँह की ओर बढ़ता है तो देखता है कि उसमें भी सारे कीड़े भरे पड़े हैं । इस तरह कहिए की उसका फाटल नशीब, उस आम को भी खा नहीं सका । जब करमा फिर आगे बढ़ने लगा तो बगीचा का मालिक करमा के बारे में पूछा और करमा ने उसे भी अपना यात्रा वृतान्त बतलाया । तब उसने भी करमा से अपना बगीचा के आम फल में कीड़ा लगने का कारण और उसका उपाय करम देवता से पूछ कर आने को कहा । इस तरह करमा अपने उद्देश्य की प्राप्ति के लिए आगे बढ़ता गया ।

कुछ दूर और आगे जाते-जाते उसे एक गाय मिली जो घोर संकट में पड़ी हुई थी । क्योंकि गाय और बछड़ा में स्वभाविक प्रेम भाव समाप्त हो गया था । चूंकि करमा बिल्कुल भूखा-प्यासा था गाय का दूध पीना चाहा। जब पीने के लिए दूध दूहने लगा तो दूध की जगह खून निकलने लगा। इस तरह करमा गाय का दूध भी नहीं पी सका । गाय का मालिक भी करमा से दूध के जगह खून निकलने का कारण और निदान करम देवता से पूछ कर लेते आने को कहा ।

आगे जाते जाते करमा को और ज्यादे भूख और प्यास लगने लगी। उसी समय उसे गाँव में ढेकी कूटने की आवाज सुनाई पड़ी, करमा वहाँ पहुँचा और ढेकी कूटने वाली भोगताइन औरत से खाने के लिए चिंऊड़ा मांगा । महिला कहने लगी कि देखो न क्यों हमारा चिऊड़ा ही नहीं बनता है। इस तरह भोगताइन भी करमा से अपना चिउड़ा बनने का निदान लाने का

आग्रह किया । फिर करमा आगे बढ़ता गया, जाते-जाते उसे मगरमच्छ मिला जो एक पानी का बूंद वाला आवरण लेकर गरम जमीन का बालू में तड़प रहा था । कहीं कहीं लोग केकुआ का भी जिक्र करते हैं। मगरमच्छ भी करमा का प्रयोजन पूछा और अपना कष्ट का कारण और निराकरण लौटती बार होते आने को कहा ।

करम देवता का खोज में निकला करमा को अब बहुत दिन लग गया। अन्त में करमा को एक बहुत बड़ा समुद्र दिखाई दिया और उसी समय समुद्र पार में करमा को उसका आराध्य देव-वृक्ष करम का पेड़ दिखाई दिया। करम राजा को देखकर करमा के मन में खुशी का ठिकाना नहीं रहा । अब अपने किये हुए पाप से छुटकारा पाने की आशा और अधिक बढ़ गयी। लेकिन सवाल था कि इतना बड़ा समुद्र को पार कैसे किया जाए? उसके लिए यही सबसे बड़ा परीक्षा था । लेकिन दुःख और कष्ट झेलने वाला मगरमच्छ करमा को मदद करने का वचन दिया और अपने पीठ पर बैठा कर उसे समुद्र पार करम पेड़ तक पहुँचाया, इतना बड़ा साहस का काम करने के लिए करमा तनिक भी नहीं घबड़ाया। इस तरह करमा करम देवता के पास पहुँचकर अपना घुटना टेककर माफी मांगा । दैवी शक्ति के कथनानुसार करमा ने तीन सुन्दर कोमल डाल काटकर अपने कांधा में लेकर लौट गया।

आने समय क्रमशः बारी-बारी से सबों को उसका दु:ख का कारण और निदान बतलाते गया । सबसे पहले मगरमच्छ को कहा कि करम उपवास करमइत लोग जब नदी में स्नान करने गयी थी, तब तुमने एक को निगल लिया था । इसी कारण तुम्हें ऐसा कष्ट को सहन करना पड़ रहा है। सो आइन्दे से ऐसी गलती न करना सब ठीक हो जायेगा। आते-आते चूड़ा कूटने वाली महिला को कहा कि तुम पैला में कोड़हा छाब कर चूड़ा करम उपासल वालो को कम चूड़ा देकर उसके साथ धोखा किया है। यही कारण है कि तुम्हारा चूड़ा नहीं बनता है। अब से ऐसा गलती नहीं करेगी सब ठीक हो जायेगा उसके बाद गाय मालिक के पास आया और कहा, कि जब गाय बियाती है तो प्रेम से अगल-बगल में खिरसा बाँट कर खाया जाता है-- उसे तुमने ऐसा नहीं किया और जब करम उपासल पूजा के लिए दूध मांगने गयी तो तुम उसे दूध नहीं दिया । इसी का कोप है। आइन्दे ऐसा नहीं करना। उसके बाद लौटते समय बगीचा के मालिक के पास गया और कहा कि भूखे-प्यासे राहगीरों को तुमने फल खाने नहीं दिया इसलिए तुम्हारा बगीचा का फल में कीड़ा लगा । भविष्य में अब ऐसा नहीं करोगे, सब ठीक हो जायेगा। अन्त में तालाब का मालिक को कहा कि तलाब बनाने के बाद उसका वधिवत पूजा किये बिना उसका पानी को व्यवहार किया था । करम उपवास ब्रतियों को तालाब में स्नान करते समय डांट-फटकार कर भगा दिया। इसलिए आइन्दे से ऐसा कभी नहीं करना । करमा ने करम डाल को भादो एकादशी को विधिवत गाड़कर पूजा अर्चना किया उसके बाद करमा और धरमा खुशी-खुशी राइज -राज करने लगे । इस तरह से करम कहानी का यहाँ अन्त होता है ।

ज्यों ही करम कहानी समाप्त होता है इधर करम थपड़ी गीत का बौछार शुरू हो जाता है। गीत इस प्रकार है -

लका लका बनसी, सोने केर (पटा केर) डोइर,
भा रलो रे देवरा,
मारलो राइलो मच्छइर मारलो .... ।।1।।

रींधालो मई बटालो, पानी लाने गेलो,
खाइये देलैं रे, देवरा,

कुकुर बिल्लारी मच्छाइर,
खाय देलैं रे देवरा .... ।।2।।

आगे जावा मई सेवालो-के समान ही मान्दर का ताल बजेगा।
पूंई साग तोरते-तोरते,
कारी नाग चबलक देवरा .... 2 ।।1।।

माया दया लगी देवरा,
झारियो देबे देवरा
फुकियो देबे देवरा .... ।।2।।

जियत भारी हंसमुखी,
खेलब सखी झुमारी भला
मोरले तो बड़ी रे
पासताव सखी झुमारी भला ..... ।।1।।

डीह केरा अगिया,
बन केरा कठिया,
सखी झुमारी भला
ले गेलै नदिय बोहाय
सखी झुमारी भला
हद हदा जिवा न पोड़ाय
सखी झुमारी भला
हदहदा काया न पोड़ाय
सखी झुमारी भला ।।2।।

मान्दर बजाता है शुरू- तांयक दथुंग दंग थुंग ..... ।।1।।
घुराना - दंग दतांग नतंग दंगथुंग
दंग थींग दातंग दंगथुंग
तांयक दथुंग दंगथुंग .... ।।2।।

चाँदो जे नुगी गेला आयो,
बिरिया जे ढ़रकय आयो,
बिरिया जे ढ़रकय ...... ।।1।।

बाबु रे लम्का रैया,
खंड़ा तरूवाइर धारय आयो,
खड़ा तरूवाइर धारय ...... ॥2॥

बैनी गे लम्की बैनी,
किया सिन्दुर धारय आयो,
किया सिन्दुर धारय ...... ॥3॥

बाबु रे लम्का राइया,
करम डारी काटय आयो
करम डारी काटय ...... ॥4॥

बैनी गे लम्की बैनी,
करम डारी झोकय आयो,
करम डारी झोकय ...... ॥5॥
मान्दर का ताल उपर के जैसा ही ।

इस तरह से अखड़ा में भर रात किसीम का करम गाना का ताँता चलता रहता है ।

परना दिन :

करम पूजा का दूसरा दिन को करम बासी या "परना" दिन कहते

हैं। इस दिन, दिन भर अखड़ा में नाच-गान चलता रहता है। विभिन्न टुकड़ी खा पीकर बारी-बारी से अखड़ा में पधारते हैं । करम झाइल धुका ही मगर कुछ चलचलुवा राग में ....

1) है तुलसी सोभय, है तुलसी सोभय,
डींडा भारी तुलसी सोभय रे .... ॥1॥

तुलसी पतई झाइर गेला नयो,
जनम युग नहियर हुटय रे ...... ॥2॥

2) पोखेरा का पीड़े, पीड़े केकर पिया आवय,
हम काही हमर पिया आवय रे ...... ॥1॥

ना लागे तोर पिया, न लागे हमर रे,
करम का हाड़ी पिया आवय रे ..... ॥2॥

मान्दर बजता है :
शुरू - तांयक दंतग थींग तांयक दथुंग .... ॥1॥
धुराना - दंग तंगदा नतंग थींग तांयक दथुंग .... ॥2॥

परना के दिन ही गैराही जवा, जिसे पंच जवा भी कहते हैं, अखड़ा में लाते हैं और सबों को आर्शिवाद के रूप में बाँटते हैं और प्रणाम करते हैं -

उसी समय गीत गाते हैं :

केकर मुड़े हरदी रंगल फेटारे,
केकर मुड़े जावा फूल रे .... ।।1।।
राजा का मुड़े, हरदी रंगल फेटा रे,
रानी की मुड़े जवा फूल रे ...... ।।2।।

भरनी भराना :

करम थपड़ी गीतों का जब दौर चलता है, तो अखड़ा में भरनी भराने वालों का तांता लग जाता है, जिसका दृष्य देखे बिना नहीं रहा जा सकता है। कोई घर से रोटी को लेकर भरनी भराता है, कोई बारी बगान का लौवा, कोहड़ा, झिंगी गोंगरा, खीरा वगैरह को लाकर अखड़ा में भरनी भारता है। उस दिन सबके लिए छूट रहता है । कोई किसी को इसके लिए गाली गलौज नहीं देता है। उस फल-फूल को कोई भी व्यक्ति भरनी भराने वालों से छीन लेता है और करम के पास एक टोकरी रखा रहता है, उसी में जमा करता है । कभी-कभी कोई अपना अपना घर भी ले जाते हैं । उसके बाद उसे परना दिन ही करम विसर्जन के बाद या उसके दूसरे दिन हड़िया के साथ चखना बना कर खाते पीते और रीझ रंग करते हैं। भरनी का जहां तक

प्रश्न है कभी कभी कुंवारी लड़की तथा औरतें भी भरनी भराती है। कभी-कभी ऐसा भी देखने को मिलता है कि उसे घर में ताला बन्द कर देने के बावजूद घर से निकल कर अखड़ा चली आती है। लेकिन ऐसा भरनी अब करीब करीब समाप्त सा होता नजर आ रहा है। इसी से लोग सत्य भरनी तथा ठकवा भरनी भी कहते हैं । कहीं-कहीं देहात के गाँवों भर में अभी देखने को मिलता है ।

करम डाईर जोड़ना :

परना के दिन गाँव में लड़के-लड़कियाँ "करम डाईर" जोड़ाते हैं। जिसका आचार-व्यहार, रूप-रंग, गहरी संबंध प्रेम कुछ अंशों में मिलता जुलता नजर आता है। करम डाईर जोड़ाने के बाद उसका नाम नहीं लेते हैं तथा उसका या उनकी नाम से सम्बोधन करम डाईर से होता है । करम डाईर

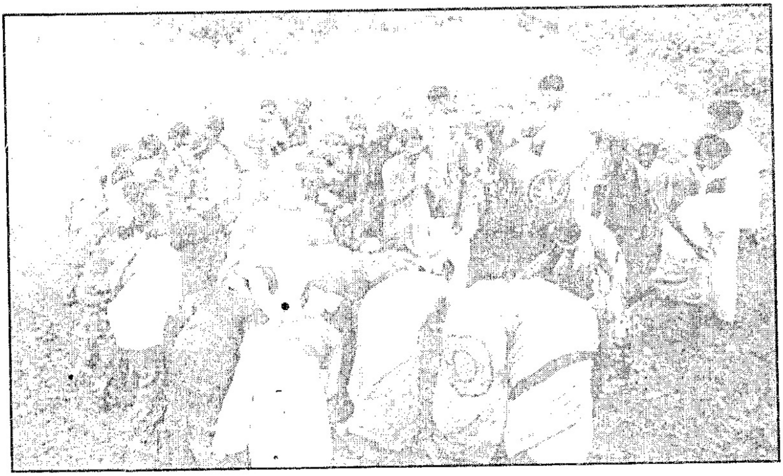

जोड़ाने के बाद उनके माता-पिता को भी करम डाईर बाप, करम डाईर माँय से सम्बोधन किया जाता है । कितना सुन्दर प्रेम रिश्ता को इज्हार करता है। यह प्रचलन शुरू से ही छोटानागपुर के आदिवासी और सदानों के बीच प्रचलित है।

करम का विसर्जन :

प्राय: सभी जगह परना दिन के दूसरी बेला में करम राजा का विसर्जन करने की परम्परा निभायी जाती है। कहीं कहीं तीसरा दिन को भी विसर्जन करते हैं। सादन भाई लोगों तो परना दिन सूर्योदय होने तक विसर्जन

कर देते हें पाहन या अधिकृत व्यक्ति अखड़ा में जाकर विधिवत पूजा अर्चना करते हुए करम को उखाड़ देता है और तीन लड़कियाँ उसे अखड़ा में तीन बार घुमाती है। घुमाने के लिए जिस तरह से करम को जंगल से काट कर लाने के समय का गीत राग और ताल गाते बजाते है वैसा ही ताल में घर-घर घुमाने के समय बजता है। गीत इस प्रकार है -

चला से करम डाईर, चला से,
भाइया का अंगेनाए चाला से .... ।।1।।

मांगा से करम डाईर मांगा से,
कोना में हाड़ी आहे सेक मांगा से ...... ।।2।।

मांगा से करम डाईर मांगा से
डलिया में रोटी आहे सेके मांगा से ..... ।।3।।

कहीं-कहीं करम राजा को कुछ प्रमुख घरों जैसे- पाहन, महतो, कोटवार, पानी भारा इत्यादि के घरों में घुमाया जाता है। लेकिन कहीं-कहीं गाँव के छोटे-छोटे बड़े प्रत्येक घरों में घुमाने की परम्परा निभायी जाती है। जब करम राजा किसी के घर पहुँच जाता है तो उसे घर की गृहनी या

मालकिन लोटा में पानी लेकर करम डाल को धोती है, तेल सिन्दुर का टीप लगाती है और श्रद्धा से अपनी मनोकामना लेते हुए सिर झुकाकर प्रमणाम करती है। उस समय इस प्रकार गीत गाते हैं –

गोड़ धोय-गोड़ धोय, देले गे आयो,
करम के विदा कइर देगे आयो ..... ।।1।।
टीपा सिन्दुर, टीपा सिन्दुर देले गे आयो,
करम के विदा कइर देगे आयो .... ।।2।।

करम राजा जिस घर में जाता है, उस घर में सभी को आदर के साथ अगर है तो बासी-कुसी रोटी, तथा हड़िया पिलाया जाता है और उनलोगों को हार्दिक स्वागत किया जाता है अगर ऐसा संभव नहीं है तो कुछ रुपया पैसा दे दिया जाता है। इस दरमियान करम को जमीन पर नहीं रखा जाता है, उसे छप्पर पर रखते हैं। इस तरह करम को सभी घरों में घुमाने के बाद सुविधानुसार तालाब, नदी या दोन तरफ रीझ-रंग से सब मिलकर नाचते गाते ले जाते हैं और विसर्जन कर देते हैं। विसर्जन करने समय विदाई का दुःख का एहसास सभी को होता है और वे करम राजा से कहते हैं-

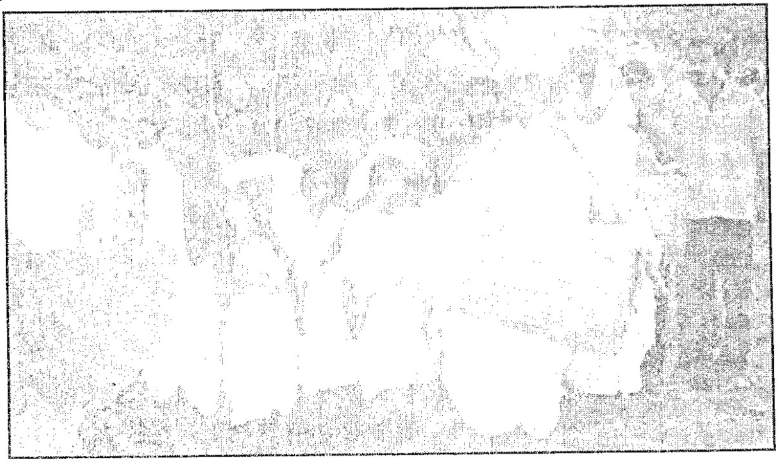

इऊँ उल्ला रहचकी करम,
जोखंयन-पेल्लयन खरा रीझा बाचकी
करम जोखंयन-पेल्लयन खरा रीझा बाचकी ..... ।।1।।

अक्कुन गा करम,
जोंखयन-पेल्लयन टुवारी नंज़की,
करम जोंखयन-पेल्लयन टुवारी नंजकी ..... ॥2॥

अर्थ :-

इतना दिन तो करम लड़के लड़कियों को खूब रीझ-रंग करायी। अभी तो हम युवक युवतियों को टुवर करके जा रहे हो ।

कोने डाहर आले रे करम
कोने डाहर जाबे करम
कोने डाहर जावे करम
बन डाहर आले रे करम,
नदी डाहर जाबे करम,
नदी डाहर जाबे करम

विसर्जन के समय दुःख भरी शब्दों में कहते हैं जाओं करम जाओ हमारी सभी रोग-पाप को लेते जाओ कहकर पानी में विसर्जन कर दिया जाता है। विसर्जन करने के बाद सभी हाथ पैर धोकर एक जगह इक्ट्ठा होते हैं और माठा गीत गाते हुए गाँव की ओर चल पड़ते हैं । माठा गीत इस प्रकार है -

कानेे से आवे, लली माटी केरा मान्देरा,
काने से आवे माठा खीड़ भला हायरे ..... ॥1॥
पूरब से आवे, लली माटी केरा मान्देरा,
पच्छिमें से आवे माठा खीड़ भला हयरे ..... ॥2॥

मांदर का ताल :

शुरू-एकधी नंतग, एकधी नंतग, एकधी नंतग ....
घुराना-दथुंग नंतग धीगंदा नंतग, दांगदा नंतग
दथुंग नंतग एकधी- नंतग ......

उसी दिन के बाद अगहन या कार्तिक जतरा का गीत भी याद-कदा सुनाई पड़ता है ।

लोयो मुड़मा एका मासे लगिया
ए-र्रा कला गे पोलकी कोय पेल्लो .... ॥1॥

लोयो मुड़मा कार्तिक मासे लगिया
ऐ-र्रा कला गे पोलकी कोय पेल्लो ..... ।।2।।

अर्थ :-

लोयो मुड़मा जतरा कौन महीना में लगा? तुम देखने नहीं जा सकी लड़की । लोयो मुड़मा जतरा कार्तिक महीना में लगा, तुम देखने नहीं जा सकी लड़की ।

करम राजा को विसर्जन कर घर लौटने के बाद भी करम का माहौल समाप्त नहीं हो जाता है। गाँवों में तो करम बासी, तिवासी तक खूब धूम-धाम रहता है। करम में विशेषकर भाई-बहन का प्यार का इजहार अधिक मिलता है ।

बरतो बहिन बेचोत कोय,
आयो बाबा ऐरा गे बरओर रे,
भाई बन्द ऐरा गे बरओर रे ..... ।।1।।

आयो बाबा ऐरोर होले,
बहिन गो दवलेकन लग्गो रे,
बहिन गो सुन्दर एकन लग्गो ..... ।।2।।

अर्थ :-

एक भाई अपना बहन से कहता है कि आओ बहिन हमलोग एक साथ खेलेंगे, उसे माता-पिता, भाई-बन्धु देखेंगे । माता-पिता, भाई-बन्धु देखेंगे तो उनलोगों के हमलोगों का खेलना बहुत अच्छा लगेगा, बहुत सुन्दर लगेगा ।

परना के दिन या उसके दूसरे दिन खीरा बेटा को खंड-खंड काट कर चिऊड़ा उसका पोटा के साथ घर-घर भुलाते हैं और बाँटते हैं। खीरा को केवल उसका आजा-आजी, नाना-नानी रिश्ता लगने वाले ही खाते हैं। दूसरों को चिऊड़ा उसका पोटा मानकर दिया जाता है। शादी करने के बाद तीन साल तक लड़का तरफ से करम डौड़ा लड़की के घर करम के शुभ अवसर पर पहुँचाया जाता है। जैसा कि मैंने पहले भी कहा है कि आदिवासियों के लिए करम के बाद ही राइज बहुरता है। इसलिए जितना नया शादी-विवाह का कार-बार करम बितने के बाद ही शुरू होता है। इसलिए भी उपवास

करमाईत पारवती लोग अपने करम उपवास में बाल-बच्चों की कामना करती है। इसका आश्य इस गीत से मिलता है -

करम डौड़ा नू पेल्लो कोय,
बबु निंगहय चींखा लगी रे ..... ॥1॥

पेल्लोर दिम तंग्गियों, जोंखर दिम तम्बर,
बबु निंगहय चींखा लगी रे ..... ॥2॥

अर्थ :

करम का डौड़ा में लड़की तुम्हारा बबु (बच्चा) रो रहा है। लड़कियाँ ही उसका माता और लड़के ही उसका पिता है। करम डौड़ा में कौन रो रहा है? वह तो खीरा बेटा है वही रो रहा है। इस तरह से आराध्य देव-वृक्ष करम और उसका कहानी संक्षेप में यही समाप्त होता है।

नोट : इस लेख में मैं जितना तथ्यों को संक्षेप में दर्शाने का प्रयास किया है, वह अधिकतर देहाती गाँवों का है और वाक्यों की उपयुक्ता के लिए अनेकों शब्दों का प्रयोग प्रचलित भाषा में किया गया है । विशेषकर शहरों में करम मनाने वालों के गले सीधे नहीं उतर सकता है। क्योंकि उसे ऐसा परिवेश कभी देखने को नहीं मिला है। जैसे करम टोंगरी, भरनी भरना, फूल लोरना इत्यादि । मैं बिल्कुल दावा तो नहीं कर रहा हूँ कि मैं जो लिखा हूँ बिलकुल सटीक है, लेकिन हाँ तथ्य से भी बिल्कुल परे तो नहीं है। मेरा सही अर्थ में इसका एक सही निचोड़ और एकरूपता समाज के सामने आने का प्रयास है। अन्त में सभी आदिवासियों और सदान भाई अगला करम खुशी-खुशी मनावें यही मेरी हार्दिक शुभकामना है -

जय झारखण्ड

लेखक
श्री सरन उराँव
एम.ए., एल.एल.बी., वरीय लेखाकार
कार्यालय- महालेखाकार (लेखा एवं हक) I
झारखण, राँची
ग्राम - हेहल, पावा टोली, राँची

उपसंहार

झारखण्ड की इस धरती पर कई जन-जातिये समूहों का निवास स्थान है, जिसमें उराँव जन-जाति का एक प्रमुख स्थान है। झारखण्ड में 30 से भी अधिक जन-जातियाँ निवास करती है। उसमें तीन चार ही जन-जातियां उन्नत अवस्था में है, उसमें भी संभवतः उराँव सर्वोपरि है। जनसंख्या की दृष्टिकोण से भी संथालों के बाद इसका दूसरा स्थान है। 1991 की जनगणना के अनुसार बिहार की जन जातियों की संख्या 66,44,010 है। उसमें 1981 की जनगणना के अनुसार बिहार की जनजातियों की संख्या 58,10,767 है जिसमें उराँव जनजाति की संख्या 10,48,064 है। उराँव उन जातियों को झारखण्ड का आदि निवासी नहीं माना जाता है ये दक्षिण भारत में रहते थे । बाहरी शक्तियों के दबाव में आने के कारण ये अपने पुराने निवास-स्थल से उतरी भारत की ओर आये। सोन नदी की तराई में आकर स्थायी रूप से कृषि करने लगें, किन्तु उन्हें वहाँ से भी भागना पड़ा, तब वे रोहतास के पठार में शरण लिए। रोहतास में उनका गढ़ था । उसके बाद अन्त में वे छोटानागपुर अभी झारखण्ड में बस गये । ऐसा लगता है शायद इसका यह अन्तिम पड़ाव होगा । आखिर अब भागेंगे तो कहाँ भागेंगे ।

इसीलिए यह गीत संभवतः कुड़ुख में गाया गया है –

रोहितास ती बरेचर, नगपुर नू उक्ककर,
अक्कुन कुड़ुखकर, एकेसन कालोर रे ..... ॥1॥

उत्तर नू हिमालय दखिन नू समुदर,
अक्कुन कुड़ुखर एकेसन कालोर रे .... ॥2॥

खद्द खर्रर परदियर, असम भोंटाग निन्दिया,
अक्कुन कुड़ुखर एकेसन कालोर रे ..... ॥3॥

इसानुम लाड़ओत, इसानुम झुझोओत
राजी नामन बचा बाओत रे
देशा नामन बचा वओत ...... ॥4॥

अर्थ :

रोहतास से आकर नागपुर (छोटानागपुर) में बस गये उराँव, अभी तुम अब कहाँ जाओगे ? उत्तर में हिमालय पहाड़ है दक्षिण में समुद्र है तो अभी उराँव तुम कहाँ जाओगे? बाल-बच्चा बढ़ गये असाम-भोटांग भी भर गया अब उराँव तुम यहाँ से कहाँ जाओगे । अब तुम्हारे लिए एक ही उपाय है कि यहीं पर दुश्मनों से लड़-झगड़ कर अपना राज्य, अपना देश को बचाना है ।

उराँव का अपनी भाषा है कुड़ुख है। द्रविड़ भाषा में कुड़ुख का अर्थ मनुष्य होता है। इस शब्द का अर्थ कई विद्वानों ने कई तरह से लगाया है, किन्तु यह निर्विवाद है कि उराँव द्रविड़ जाति के थे । उराँव जन-जाति के लोग मुख्य रूप से झारखण्ड में राँची, गुमला, लोहरदगा, सिंहभूम, पलामू, हजारीबाग में है, इसके साथ-साथ पूर्णिया, सासाराम आदि जिलों में भी छिट-पुट है, परन्तु मध्यप्रदेश तथा उड़ीसा के अतिरिक्त भी भारत के कुछ अन्या प्रांतों में भी पाये जाते हैं । कहीं भी हो उरांव जन-जातियों की एक अलग पहचान है। अगर सही माने में कहा जाये तो हमारे पास क्या नहीं है। खेत-खलिहान हमारी मूल सम्पत्ति है। हमारी अपनी भाषा है, अपनी संस्कृति है, अपना मौसम के आधार पर हरेक मौसम का गीत है, अपना बाजा और नृत्य है। इस तरह सभी मामलों में हम काफी सम्पन्न हैं । हम अनूठे और अद्वितीय हैं । आज भी हम किसी के पीछे नहीं हैं । भले ही हमें अभी दबाया, कुचला और शोषित किया जा रहा है ।

हमें अब सिर्फ अपने अन्दर की आत्म-विश्वास शक्ति को जगाने की जरूरत है। शिक्षा के क्षेत्र में भी अब हम काफी पीछे नहीं है। हमारे अन्दर असीम क्षमता है। उराहरण के तौर पर हमारे स्व० कार्तिक उराँव साहब को लिया जाये, वे किसी बड़े घर अथवा बड़ा जाति धर्म के नहीं थे, बल्कि हमारे ही बीच के व्यक्ति थे । गरीबी एवं आर्थिक तंगी के बावजूद भी उन्होंने अपने अन्दर के सामार्थ्य शक्ति को जगाया और देश-विदेश में ख्याति अर्जित की । इससे हम सभी को प्रेरणा लेनी चाहिए । लेकिन हाँ इसके लिए शिक्षा, ईमान्दारीर और अच्छी आचरण की अहम भूमिका है। हमें ईमान्दारी और अच्छी आचरण के साथ काम करने की आवश्यकता है, यही शिक्षा हमें "आराध्य देव-वृक्ष करम" कहानी में भी मिलता है। हमारा कर्म

ही हमारा धर्म है। जब तक हम अच्छा करम नहीं करते हैं तब तक हम धरम नहीं कर सकते हैं। सृष्टि के निर्माण के दिनों से ही हमारा पूर्वज कहते आ रहे हैं कि हमारा कर्म ही हमारा धर्म है।

हम हिन्दु धर्म ग्रंथ गीता में भी यही उपदेश पाते हैं कि कर्म ही धर्म है ।

अब हमें जागने की जरूरत है । कहा जाता है कि "सोया सो खोया"। अगर हम अभी तक सोये रहेंगे तो हमारा समाज, धर्म, संस्कृति आचरण, जल, जंगल, जमीन, इज्जत आदि का लूटा जाना स्वाभाविक है। समाज को बचाना है तो हर वर्ग के व्यक्तियों को निष्ठावान, ज्ञानवान, कर्त्तव्य-परायण और दृढ़ संकल्प के साथ काम करने की आवश्यकता है। यही अभी का समय की पुकार है। मनुष्य के रूप में पैदा लिए हैं तो हमें मनुष्य के तरह समाज में इज्जत और सम्मान के साथ जीने की बात सोचना चाहिए । अपने महान पुरखों का इतिहास और संस्कृति की ओर देखने से पता चलता है कि वे कितना स्वाभिमान और सम्मान की जिन्दगी जिए , जिससे आज भी हम प्रेरण लेते हैं। ऐसे महान पुरूषों में बिरसा मुण्डा सिद्ध-कान्हू, तिलका मांझी, बुद्धुवीर, जतरा टाना भगत, सिनगी दई, चन्दु दई, कैली दई, कार्तिक उराँव, तेलंगा खड़िया आदि हैं ।

आज हम जातीय शोषण और अत्याचार के कीचड़ में फंसे हुए हैं। अब हमें अपने बल पर उठना है और उन जंजीरों को तोड़कर फेंक देना है, जिसने हमारी जाति, धर्म, भाषा, संस्कृति और सारे तरक्की और उन्नति के साधनों को कैद कर रखा है । यह हम सभी झारखण्ड वासियों का दृढ़ संकल्प होना चाहिए ।

"जय-चाला जय-करम जय-धरम"

हमारे यहाँ आदिवासी धर्म, संस्कृति, साहित्य एवं कला से संबंधित् वस्तुएँ उपलब्ध हैं।

पुस्तक मिलने का पता:
बन्दी उरांव (अध्यक्ष)
H.O.- शरण गहि डाड़ा "चाला अखड़ा खोड़हा",
हेहल, पावा टोली, राँची-5
मोबाईल : 94315 95857
: 0651-3208494
जय धरमेश (9939283307) जितेन्द्र उराँव
आई॰ टी॰ आई॰ बस स्टैन्ड, हेहल, राँची

C.A.K

मूल्य 100/-

मुद्रक- शरण प्रिंटिंग प्रेस, राँची फोन नं०- 0651-3208494